हिन्दू कौन–
आर्य कौन?

आर्य राम प्रसाद

ओ३म

दो शब्द

पाठकगण! मेरा जन्म छह जून सन् 1923 को कृषक पिता स्व0 श्री चौहल सिंह सैनी तथा माता श्रीमती मनोहरी देवी के यहाँ ग्राम भौरीं वर्तमान जनपद हरिद्वार में हुआ। मेरा परिवार कई पीढ़ियों से शिक्षा से वंचित रहा होगा। मेरे माता - पिता ने कितने ही कष्ट उठाकर मुझे दसवीं तक पढ़ाया। इसमें मेरे गुरु स्व0 श्री वासुदेव शर्मा की प्रेरणा रही। वह प्राईमरी पाठशाला में अध्यापक थे। मेरे विचारों पर माता - पिता का प्रभाव रहा। मैं विद्यार्थी जीवन से ही वैदिक धर्म और आर्य - जाति का अनुयायी रहा। मैंने अंग्रेजी सरकार के प्रतिनिधि ज़मींदारो के दुर्व्यवहार को भी देखा और स्वयं सहा भी। यह गांधी जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता के आन्दोलनों का काल था। मैंने लखनऊ क्रिश्चियन कालेज, लखनऊ से सी0टी0 अध्यापक की ट्रेनिंग प्राप्त कर 1949 में भल्ला कॉलेज हरिद्वार में नियुक्ति प्राप्त की। अध्यापन काल में मैंने अपने शिष्यों को तथा अपने शिक्षक बन्धुओं को भी सनातन धर्म और आर्य जाति से ही सरकारी प्रत्रावली को लिखने की प्रेरणा दी। मेरे धार्मिक विचारों से वे सहमत तो थे, परन्तु पाश्चात्य सभ्यता और समय के प्रभाव से इसका प्रयोग कम करते थे। मेरे जीवन के इक्यासीवें साल में मेरे मित्र श्री जियालाल शर्मा अवकाश प्राप्त हिन्दी प्रवक्ता भल्ला कालेज, श्री हंसराज सूद अवकाश प्राप्त पोस्ट मास्टर, श्री वैद्य महेश चन्द्र शास्त्री स्नातक गुरुकुल कांगड़ी और श्री काशीराम प्रैस मैनेजर ने मुझे इन विचारों को लिपि बद्ध

करने की प्रेरणा दी। अतः मैंने इस पुस्तक *"हिन्दू कौन – आर्य कौन?"* में कुछ ऐतिहासिक घटनाओं, धार्मिक कृत्यों में सुधार, आर्यों को देश प्रेमी बनने की प्रेरणा, स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ नियम, और कुछ भजनों का संकलन किया है। ईश्वर की कृपा होगी तो पाठकगण इसका लाभ उठाकर लाभान्वित होंगे एवं मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

धन्यवाद!

मौहल्ला – म्याना
कनखल
हरिद्वार (उत्तरांचल)
दिसम्बर – 2003

लेखक
आर्य रामप्रसाद

विषय सूची

५, भगवंत पुरम
कनखल
८-११-०८

बंधुवर,

सप्रेम नमस्ते।

पत्र मिला। हिन्दू का शाब्दिक अर्थ वही है जो आपने समझा है। आर्य शब्द के प्रयोग की बात स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कही थी। हिन्दी के लिए नागरी शब्द का प्रयोग पहले होता ही था। बचपन में पढ़ते हुए हमने नागरी शब्द अपने अध्यापकों के व्यवहार में चलते हुए सुना है।

समाज की बलिहारी है। अंग्रेजी दासता से मुक्ति मिले तो स्वतंत्र स्वदेशी चिन्तन हो।

आशा है, स्वस्थ और सानन्द हैं।

सस्नेह
विष्णु प्रभाकर

प्रो0 स्वतंत्र कुमार
कुलपति
PROF. SWATANTRA KUMAR
VICE-CHANCELLOR

ओ३म
OM

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार – 249 404 (भारत)
GURUKULA KANGRI VISHWAVIDYALAYA
HARDWAR - 249 404 (INDIA)

क्रमांक/Ref. No.

दिनांक/Dated

दिनांक 5 जुलाई, 2007

माननीय श्री रामप्रसाद जी,

सादर नमस्ते ।

आपका विचारोत्तेतक पत्र प्राप्त हुआ तदर्थ धन्यवाद । मैं आपके इन रहस्योदघाटक पत्र के तथ्यों को विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रचार प्रसार के लिए भिजवा रहा हूं तथा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के परिसर में भी यथास्थान शिलापट्ट लिखवाने के प्रयास कर रहा हूं ।

आप चौरासी वर्ष की आयु में भी समाज के प्रति इतने जागरुक हैं ईश्वर आपको शतायु प्रदान करे ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

(प्रो0 स्वतंत्र कुमार)

आर्य रामप्रसाद अध्यापक,
मो0 म्याना,
कनखल,
हरिद्वार ।

दूरभाष/Tele. : 01334-244744 (R) फैक्स/Fax : 01334-246235 (R), 01334-246366 (O) E-mail : kumarswatantra.vc@gkvharidwar.org

भारतमाता मंदिर
हरिद्वार
3/9/06

महोदय, नमस्ते।

आपके सुझाव प्रशंसनीय हैं। उनका प्रचार करने का प्रयत्न किया जायेगा। धन्यवाद।

भवदीय,
स्वामी सत्यमित्रानंद
ॐ

'हिन्दू कौन–आर्य कौन'?

ओ३म मा प्र गाम पथो वयं।

इसका अर्थ है कि हे संसार के रक्षक प्रभु! हम पथ भ्रष्ट न हों, सदैव बुद्धि और विवेक से कार्य करें।

हमारे देश की लगभग अस्सी करोड़ जनसंख्या में से अनेक अपने घरों और प्रतिष्ठानों पर भी लिखते हैं कि, 'गर्व से बोलों हम हिन्दू हैं।' हम गर्व से यह क्यों न बोलें कि हम आर्य हैं, यह शब्द व्याकरण सम्मत है। व्याकरण वह विद्या है जिससे किसी भाषा का ठीक-ठीक बोलना और लिखना समझ में आये। आर्य शब्द की व्युत्पत्ति अति प्राचीन काल में लिखे गये व्याकरण के ग्रन्थ अष्टाध्यायी की ''ऋग्तौ धातु'' से है जिससे इसका अर्थ 'श्रेष्ठ या गुणवान' है। अष्टाध्यायी महर्षि आर्य पाणनि द्वारा रचा हुआ व्याकरण का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस संस्कृत व्याकरण में ऐसी कोई धातु नहीं जिससे हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति हुई हो। यह शब्द फारसी का है।

आदरणीय पाठकगण! कृपया अग्र लिखित तथ्यों पर मनन कीजिये, तब निर्णय कर विचारिये कि क्या यह वाक्य ''गर्व से बोलों हम हिन्दू हैं'' भ्रमित नहीं है। इस के स्थान पर 'गर्व से बोलों हम आर्य हैं' क्यों न बोला जायें?

तथ्य सं0 – 1.

भारत की संस्कृति लाखों वर्ष पुरानी है, इसको वैदिक संस्कृति या आर्य संस्कृति कहते हैं। इस संस्कृति के कारण ही भारत संसार का गुरु कहलाता था। यहाँ का आर्य साहित्य ज्ञान का भण्डार है।

ऋग्वेद संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है। यह अर्थ (धन) सम्बन्धी ज्ञान से भरा है चाहे वह भूगर्भ या खगोल से सम्बन्धित हो। इस संस्कृति को मानने वाले आर्य और वैदिक धर्मी थे। इस प्रकार उनकी सन्तान आर्य हुई, हिन्दू नहीं।

तथ्य सं0 – 2.

हिन्दू कहलाने वाली जाति का कोई धार्मिक ग्रन्थ भी नहीं है। जिन ग्रन्थों को हिन्दू जाति का ग्रन्थ कहा जाता है। वे सब तो आष ग्रन्थ हैं इन में कहीं भी 'हिन्दू जाति' या 'हिन्दू धर्म' शब्द का प्रयोग नहीं है। इन में आर्य और वैदिक धर्म अथवा सनातन धर्म जैसे शब्दों का ही प्रयोग है। सब से पहले चार वेद हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं – 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद, 4. अथर्ववेद। इनके भी क्रमशः चार उपवेद है – 1. अर्थवेद, 2. धनुर्वेद, 3. गन्धर्ववेद, 4. आयुर्वेद। वेदों की व्याख्या जिन ग्रन्थों में की गई है वे ब्राह्मण ग्रन्थ कहलाते हैं। ये हैं तो कईं परन्तु मुख्य रूप से ये भी चार ही हैं जैसे ऋग्वेद का ऐतरय ब्राह्मण, यजुर्वेद का शतपथ ब्राह्मण, सामवेद का साम ब्राह्मण और अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण। यही ब्राह्मण ग्रन्थ प्राचीन साहित्य में पुराण कहलाते हैं।

वेदों के भी छह अंग हैं जिनका अध्ययन करने से वेदों का अध्ययन सरल हो जाता है, ऐसा विद्वानों का मत है ये हैं शिक्षा, कला, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष और छंद। वेदों के छह उपांग भी है जिनको दर्शन भी कहा जाता है। जैसे कपिल मुनि का सांख्य, गौतम का न्याय, पंतञ्जलि का योग, कणाद्मुनि का वैशेशिक, व्यास का वेदान्त और जैमिनि का मीमांसा दर्शन।

दश उपनिषद् भी हैं, इन से ब्रह्म विद्या का ज्ञान होता है, ये ही प्रमाणिक उपनिषद् जाने जाते हैं, ये हैं ईश, केन, कठ, प्रश्न मूण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और ब्रह्दारण्यक।

स्वामी दयानन्द द्वारा रचित्त सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन सरल है क्योंकि भाषा भारती में रचा गया है। इस में सत्य का क्या अर्थ है इस पर प्रकाश डाला गया है अर्थात् जैसे को तैसा बताना। इस आर्य साहित्य को छोड़ जो अन्य ग्रन्थ पुराण रूप में प्रचलित है उन में तथ्यों के साथ साथ अतथ्य भी हैं। अतः हम आर्य हैं, हिन्दू नहीं।

तथ्य सं0 – 3.

तथा कथित हिन्दू मत आठ सौ वर्ष पुराना है, इस का कोई प्रवर्तक भी नहीं है, इस के प्रवर्तक यदि माना जाये तो विधर्मी यवन शासक ही हैं। वैसे तो भारत में यवनों का आवगमन आठवीं शताब्दी से आरम्भ हो गया था। भारत में उस समय अनेक छोटे–छोटे राजा राज करते थे और आपस में संघर्षरत रहते थे। इसी कारण यवनों के आक्रमण बढ़ गये। वे मिलकर उन का सामना न कर सके। जब सन् 1024 ई0 में महमूद गजनवी ने गुजरात में सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण कर लूटमार मचाई तो उस समय अन्धविश्वासी धर्म के ठेकेदारों ने आर्य राजाओं को यवनों का सामना करने का आह्वान नहीं किया, केवल सोमनाथ देव पर ही विश्वास कर परास्त हुए और वह बहुत सम्पदा भारत से ले गया। यदि उसका आशय शासन करना होता तो सरलता से शासक भी बन बैठता परन्तु ऐसा न था।

आर्य राजा पृथ्वीराज चौहान (12 वर्ष) के राज परम्परा क्रम में उत्तराधिकारी अभय पाल (14 वर्ष), दुर्जन पाल (14 वर्ष), उदय पाल (11 वर्ष), अन्तिम आर्य राजा यशपाल (36 वर्ष) रहे। राजा यशपाल के उपर मुहम्मद गौरी के वंशज सुल्तान शाहबुद्दीन गौरी, गढ़ गजनी से चढ़ाई करके आया और राजा यशपाल को अलाहाबाद (प्रयाग) के किले में सन् 1192 में पकड़कर कैद किया और स्वयं दिल्ली का शासक बनकर अपना शासन पूर्ण रूप से स्थापित कर लिया (सन्दर्भ सत्यार्थ प्रकाश)। जब वे भारत की जनता के स्वामी बन गये तो उन्होंने आर्यों को हिन्दू कहा और देश को हिन्दुस्तान। यह देश तो उनका उपनिवेश था। वे अपने देश में अपने अधीनस्थ लोगों को हिन्दू कहते थे। क्योंकि भारत उनके अधीन था इसीलिये उन्होंने अपने शासितों को हिन्दू (गुलाम) कहा, क्योंकि फारसी में 'हिन्दू' शब्द का अर्थ गुलाम होता है और उस समय की प्रचलित भाषा फारसी थी। भारतीय अपना राष्ट्र खोकर असहाय हो गये थे। शासक ने जो कहा वह ही उन्होंने स्वीकार किया क्योंकि अपनी बुद्धि से गुलाम कुछ नहीं करता। अब हम स्वतन्त्र हैं। अतः हम आर्य ही हैं हिन्दू नहीं, हमारा अपना राष्ट्र भी है।

तथ्य सं0 – 4.

आदिकाल, जो सतयुग कहलाता है उसके आदि पुरुष और नारियाँ जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कपिल, विश्वामित्र, सत्य हरिश्चन्द्र, जेमिनी, कमला, लक्ष्मी, पार्वती तथा त्रेतायुग में जनक, दशरथ, वशिष्ठ, रामचन्द्र, हनुमान, भरत, सुग्रीव, केकैयी, कौशल्या, सुमित्रा, सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्ति, द्वापर युग के महाभारत नामक आदि ग्रन्थों में वर्णित सभी पात्र और गीता जैसे महान गन्थ

के प्रणेता महायोगी भगवान कृष्ण ये सब पुरुष आर्य और नारियाँ आर्या ही तो थे। आधुनिक युग में भी बारहवीं शताब्दी से पहले भारतीय आर्य और आर्या ही कहलाते थे। अत: उनकी सन्तान भी आर्य ही हैं।

तथ्य सं0 – 5.

महाभारत के युद्ध को हुए लगभग पाँच हजार वर्ष से अधिक का समय हो गया। आधुनिक वैज्ञानिकों ने महाभारत युद्ध के आरम्भ होने की तिथि ईसवीं सन् से 3060 (तीन हजार साठ) वर्ष पूर्व अठारह नवम्बर से मानी है और अन्तिम तिथि छ: दिसम्बर तथा चौदह जनवरी को सूर्य के उत्तरायन हो जाने पर महारथी भीष्म पितामह की मृत्यु, क्योंकि उन्होंने ऐसी ही इच्छा की थी कि मेरी मृत्यु सूर्य के उत्तरायण में होने पर ही हो।

यह विनाशकारी यृद्ध गृह कलह के कारण, आर्य परिवार के पाण्डव और कौरव पक्षों में हुआ। इस युद्ध में संसार के अनेक देशों के आर्य शासक कुरुक्षेत्र के मैदान में दोनों पक्षों की ओर से सम्मिलित हुए क्योंकि इन लोगों से पाण्डव और कौरव के मित्रता के सम्बन्ध ही नहीं अपितु वैवाहिक सम्बन्ध भी थे जैसे अर्जुन की पत्नी उलोयी अमेरिका की थी, शल्य इरान के थे तथा भगदत्त मंगोल आदि देशों के निवासी थे। पृथ्वी की आन्तरिक उथल–पुथल के कारण पृथ्वी की ऊपरी आकृति बदलती रहती है। इन देशों का भी ऐसा ही हुआ। उस समय सारे संसार में आर्य जाति और सनातन धर्म के ही मानने वाले लोग निवास करते थे। इसीलिये भारत निवासी उनके वंशज आर्य ही हुए।

तथ्य सं0 – 6.

बारहवीं शताब्दी से पहले भारत में जो सामान्य साहित्य लिखा गया है भले ही वह संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भाषा में लिखा हो, उसमें आर्य और सनातन धर्म जैसे शब्दों का ही प्रयोग किया गया है, हिन्दू शब्द का नहीं। जैसे महाकवि कालिदास, भाष, माघ, विभूति और क्रान्तिकारी कवि शूद्रक प्रभुति द्वारा रचित साहित्य में आर्य शब्द का ही प्रयोग है। इसलिये आर्य शब्द का प्रयोग ही उचित है।

तथ्य सं0 – 7.

आदि शंकराचार्य जिनको जगद्गुरु शंकराचार्य भी कहते हैं। इनका जन्म केरल प्रान्त में कालटी नामक ग्राम में 788 ई0 में हुआ था। ये जन्म से ही बड़ी प्रखर बुद्धि के थे। इन्होंने बाल्यकाल में ही अनेक धार्मिक ग्रन्थों का गूढ़ ज्ञान प्राप्त कर लिया और आठ वर्ष की आयु में ही सन्यास ले लिया था। माता ने ऐसा करने का विरोध किया और अन्त में जब वे न माने तो माता ने कहा 'मेरा संस्कार कौन करेगा?' उन्होंने कहा, 'माता मैं आपका संस्कार करूँगा।' उन्होंने ऐसा ही किया। जब उनकी माता स्वर्गवासी हुई तो परिवार के अन्य सदस्यों ने 'शव को सन्यासी का हाथ नहीं लगना चाहिये' ऐसा कहकर विरोध किया और उनको सहयोग नहीं दिया। अत: उन्होंने घर में ही माता का दाह संस्कार कर दिया।

उस समय भारत में जैन और बौद्ध भी मूर्ति पूजा में संलग्न थे, अन्य मन्दिरों का वे विध्वंश करते थे। देश के कर्मकाण्डी ब्राह्मण कर्मकाण्ड में लिप्त यज्ञों में पशु बलि ही नहीं अपितु मानव की भी बलि दे देते थे। इस दशा में उन्होंने वैदिक धर्म में फैले इस

अन्धविश्वास को दूर करने के लिए तत्कालीन कर्मकाण्डी विद्वानों को भी शास्त्रार्थ में परास्त किया। मंडन मिश्र तथा उनकी पत्नी भारती भी उनसे परास्त हुई। उन्होंने देश में वैदिक धर्म की एकता बनाये रखने के लिये चारों दिशाओं में वैदिक धर्म के प्रसार और प्रचारार्थ चार मठों (पीठों) की स्थापना की, उत्तर में बदरिकाश्रम की पृष्ठ भूमि में ज्योतिर्मठ, दक्षिण में शृंगेरी मठ, पश्चिम में द्वारका में शारदा मठ और पूर्व में पुरी में गोवर्धन मठ की स्थापना की। वह महान विद्वान आर्य जाति और सनातन धर्म का ही पुजारी था। उस समय हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं था क्योंकि भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र था। अतः हम आर्य हैं हिन्दू (गुलाम) नहीं।

तथ्य सं० – 8.

वर्तमान में जितने भी मत फैले हुए हैं इनमें से कोई भी मत ईसवीं से दो हजार वर्ष पूर्व का नहीं है। जैन मत के प्रवर्तक, प्रथम जैन तीर्थंकर श्रीऋषभ जी ने इस मत का प्रादुर्भाव लगभग 1800 ईसवीं वर्ष पूर्व किया। इस मत में 24 तीर्थंकर (गुरु) हुए। अन्तिम तीर्थंकर महावीर जी का जन्म 540 ईसा पूर्व व 70 वर्ष की आयु में निर्वाण प्राप्त हुआ। छठी शताब्दी में बौद्ध मत के प्रवर्तक बुद्ध जी का जन्म 563 ई० पूर्व हुआ। ईसवीं सन् से लगभग 1700 वर्ष पूर्व फिलीतीन में यहूदी मत का प्रादुर्भाव हुआ, इस मत के प्रवर्तक इसमाईल–अल–सलाम थे। हजरत मूसा, नूह तथा हजरत यूसुफ आदि महापुरुष इसी शृंखला में हुए। कालान्तर में इसी परम्परा में 25 दिसम्बर को 4 वर्ष ई० पूर्व ईसा मसीह का जन्म हुआ और इन्होंने यहूदी मत में कुछ संशोधन कर ईसाई मत चलाया-जिसका वास्तविक नाम मसीहा हैं। तब से ईसवी सन् का प्रचलन हुआ।

मसीहा मत की पहली बाईबिल यहूदियों की भाषा हिब्रु में लिखी हुई है। ईसा मसीह के समय में हिब्रु भाषा ही थी। ईसवी सन् के लगभग 570 वर्ष बाद हजरत मोहम्मद साहब का जन्म हुआ। इन्होंने भी इसी परम्परा में मसीहा मत में कुछ संशोधन (इस्लाह) कर इस्लाम मत को जन्म दिया। यह महापुरुष पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु ईश्वरीय शक्ति से इनके मुख से जो शब्द निकले उन के संग्रह का नाम कुरान शरीफ है, जो 622 ई0 में लिखा गया। यही इस्लाम मत का पवित्र ग्रन्थ है। इस के अनुयायी मुस्लिम या मुसलमान कहलाते हैं। 622 ई0 में यह मक्का से मदीना चले गये तब ही से हिजरी सन् चला। बारहवीं सदी में हिन्दू मत का प्रचलन हुआ, इसके प्रवर्तक तत्कालीन इस्लाम मत के मानने वाले भारत के शासक ही थे। पन्द्रहवीं शताब्दी में सिख मत के प्रवर्तक श्री गुरु नानक जी का जन्म सन् 1469 ई0 में हुआ। इन की बाणी को गुरु ग्रन्थ साहब के नाम से सम्मानित किया जाता है और यही सिखों का धार्मिक पवित्र ग्रन्थ हैं।

केवल एक हिन्दू मत को छोड़कर सब मतों के सार्थक अर्थ हैं जैसे जैन जिन से बना है जिसका अर्थ है इन्द्रियों को वश में रखने वाला, बौद्ध का अर्थ है जिसको ज्ञान प्राप्त हो गया हो, यहूदी का अर्थ है सब की सहायता करने वाला, मसीहा का अर्थ दुखियों और असहायों की सहायत्ता करने वाला, मुस्लिम अर्थात् मुसलमान जो अपने वचन का पक्का हो, पारसी जिसकी संगति सदा सुखदायक हो। सिख जो शिष्य के समान गुणों को ग्रहण करने वाला हो। हिन्दू शब्द फारसी का है इसका अर्थ है किसी के अधीन रहने वाला अर्थात गुलाम। अब स्वयं विचार करें। सनातन धर्म के

अनुयायी आर्य ही हैं या कुछ और।

तथ्य सं0 – 9.

महाभारत के युद्ध के बाद कई सभ्यताओं ने भिन्न-भिन्न देशों में जन्म लिया और समाप्त प्राय: हो गई जैसे नील घाटी की सभ्यता, रोम की सभ्यता, मेसोपोटामिया (फरात और दजला नदियाँ) की सभ्यता, चीन की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता। ये सब सभ्यतायें महाभारत काल के बाद की ही हैं। महाभारत के बाद वैदिक धर्म में विकृतियाँ पैदा हो गई थी जैसे देवी देवताओं की पूजा और यज्ञ आदि में पशु बलि दी जाने लगी थी वैसे ही इन सभ्यताओं में भी देवी-देवताओं और बलि का वर्णन मिलता है। अत: ये लोग भी आर्यों की ही परम्परा में थे।

तथ्य सं0 – 10.

आधुनिक इतिहासकारों ने हिन्दू शब्द को सिन्धु नदी के कारण बना हुआ बताया है। उनका कहना है कि भारत में यवनों के आक्रमण शुरू हुए और उन्होंने सिन्धु नदी को जब पार किया तो वे लोग अपनी भाषा की कठिनाई के कारण 'स' न बोलकर 'ह' बोलते थे। इसीलिये उन्होंने सिन्धु नदी के पूर्व पार वाले लोगों को हिन्दू कहा। उनका यह तर्क निस्सार है क्योंकि सिन्धु में भी इस का प्रयोग है वह तो आज भी सिन्धु ही कहलाती है। और सिन्धु से पश्चिम वालों को क्या कहा? सब से पहला आक्रान्ता सिकन्दर 326 ई0 पूर्व भारत पर आक्रमण करने आया था। पश्चिमोत्तर भाग पर विजय कर, अपने प्रतिनिधि सैल्युकस को यहाँ छोड़कर 323 ई0 पूर्व में लौट गया और इधर सैल्युकस को आर्य राजा चन्द्र गुप्त

मौर्य ने अपने महान राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री गुरु आर्य चाणक्य की मंत्रणा से पराजित कर इस भाग पर अपना अधिकार कर लिया और उसकी पुत्री ऐथना से विवाह भी किया और बारहवीं शताब्दी तक तो आर्य ही भारत में शासन करते रहें, इसलिये हम आर्य ही है। कुछ इतिहासकारों ने हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति इन्दु से बताई है ऐसा तर्क दिया है कि जैसे चन्द्रमा (इन्दु) शीतल, सुन्दर सबको सुख देने वाला होता है वैसे ही हिन्दू भी सहनशील दयालु, परोपकारी होता है। इन लोगों से पूछा जाय कि यदि हिन्दू इन्दु से ही लिया गया है तो बताईये कि इन्दु तो आदिकाल से ही आकाश में चमकता आ रहा है उस काल से तो आर्य भी संसार में थे। फिर हिन्दू तब से क्यों नहीं? यह केवल कपोलकल्पित है।

अठारहवीं शताब्दी में एक कर्मकाण्डी विद्वान हुए जिनका नाम था माधवाचार्य इन्होंने तर्क दिया है कि हिमालय से 'हि' लिया और सिन्धु (सागर) से 'दू' (धु) लिया, इस प्रकार हिन्दू शब्द बना और हिमालय तथा सागर के बीच में रहने वाले लोग हिन्दू कहलाये। भला उनसे उस समय कोई पूछता कि हिमालय भी और सागर भी हजारों वर्षों से अपने स्थान पर है और भारत में हजारों वर्षों से आर्य ही रहते आ रहे थे। तब तो उनका यह तर्क निरर्थक है। कुछ इतिहासकार कहते हैं कि आर्य मध्य ऐशिया से भारत में आये और सिन्धु घाटी में बस गये। इन इतिहास विज्ञ लोगों ने यह क्यों नही सोचा कि महाभारत कुरुक्षेत्र अर्थात् वर्तमान हरियाणा प्रान्त में ही लगभग पाँच हजार वर्ष से अधिक, पहले लड़ा गया था और वे आर्य ही थे। महाभारत ग्रन्थ में तो उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम अर्थात् सम्पूर्ण भारत की पवित्र नदियों के नाम है। इससे

सिद्ध होता है कि आर्य पहले से भारत में रहते थे। तिब्बत का पठार संसार में सबसे ऊँचा पठार है और यह मध्य एशिया तक भारत का ही भाग था। संसार का सबसे प्राचीन साहित्य आर्य साहित्य ही है इसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रभु ने सारी सृष्टि के निर्माण के पश्चात अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति मानव का निर्माण युवा अवस्था में ही तिब्बत के पठार पर किया।

पाठक बन्धुओं! सोचिए कि क्या गर्व से बोलें कि हम हिन्दू (गुलाम) हैं या गर्व से बोलें कि हम आर्य हैं।

हाँ देखिए, यहाँ स्वामी विवेकानन्द साहित्य के नवें ग्रन्थ के पृष्ठ 286 पर अनुच्छेद दो का सन्दर्भ दिया जा रहा है। ''पाश्चात्य सिद्धान्तों के बावजूद भी हम 'आर्य' शब्द की इस परिभाषा को ही स्वीकार करते हैं, जो हमारे धर्म ग्रन्थों में दी हुई है और जिसके अनुसार वही लोग आर्य हैं जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं। यह आर्य जाति जो स्वयं संस्कृत भाषी और तमिल भाषी दो महान जातियों का सम्मिश्रण है। समस्त हिन्दुओं को समान रूप से अपने वृत्त में ले लेती है इस बात का कोई अर्थ नहीं, कोई महत्व नहीं कि कुछ स्मृतियों में शूद्र सामान्य आर्य थे और आज भी प्रारम्भिक दीक्षावस्था में आर्य हैं।'' पुरातत्व विभाग के पद्मश्री डा0 विष्णुधर पाकरणक के दिनांक 6/1/87 के दैनिक हिन्दुस्तान समाचार पत्र में प्रकाशित लेख 'आर्य मनुस्मृति' में भी यही वर्णित है। जो लोग यह कहते हैं कि गर्व से बोलों हम हिन्दू हैं, उनका कहना है कि हमारे वे पूर्वज जिन्होंने स्वतन्त्रता के लिये अपना सब कुछ बलिदान कर दिया उन्होंने इस शब्द के लिये कभी कुछ नहीं कहा। पाठक बन्धुओं! उनको इसके बारे में कुछ भी नहीं कहना था,

क्योंकि उनके सामने देश को स्वतन्त्र कराने का उद्देश्य मुख्य था और इस कार्य में सभी देश वासियों का सहयोग भी अपेक्षित था जो लिया, इसीलिए वे इस उलझन में नहीं पड़े कि कौन हिन्दू कौन आर्य। इस स्वतन्त्रता युद्ध में सभी मतों के अनुयायियों ने पूर्ण रूप से अपना-अपना योगदान दिया। भले ही अंग्रेज शासकों की कूटनीति के कारण 1916 में मुस्लिम लीग के लोग कांग्रेस से अलग हो गये और दो जातियों की नीति अपनाकर सन् 1940 में मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान की बात खड़ी कर दी।

परतंत्र देश आपत्तियों का घर होता है उसका अनुभव भलीभॉति गाँधी जी को उस समय हुआ जब वे अब्दुल्ला सेठ की मुकदमें की पैरवी करने के लिये अफ्रीका गये और डबरन नगर से पेरिटोरिया जाने के लिये रेल का प्रथम दर्जे का टिकट लेकर रेल में सवार हो कर जब बीच में मेरित्सबर्ग नैटाल की राजधानी में गाड़ी रूकी तो वहाँ एक अंग्रेज ने उनको एक सिपाही के द्वारा रेल के डिब्बे से बाहर धक्का देकर निकलवा दिया कि तुम कुली (हिन्दुस्तानी) हो, हमारे साथ यात्रा नहीं कर सकते, तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाओं। गाँधी जी उस रात की कड़ाके की ठन्ड में विश्राम गृह में बैठे रहे और उनका बिस्तर और सामान जिसको गाँधी ने नहीं उतारा था। शायद सिपाही ने स्टेशन मास्टर को सौंप दिया था। वह रात शायद गाँधी जी के लिये एक महान रात थी जिसमें गाँधी जी ने अधिकारों के लिये अहिंसा की लड़ाई लड़ने की नीत्ति सीखी और जीवन में इसका प्रयोग भी किया। और भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई इसी सिद्धान्त के द्वारा लड़ी।

हाँ इसी शताब्दी में एक युग पुरुष, (जिसका जन्म का नाम नूलशंकर था) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु बिरजानन्द को गुरु दक्षिणा के रूप में उनके सम्मुख संकल्प लेकर देश में फैले अन्धकार और अन्धविश्वास को दूर करने के लिए देश का भ्रमण कर आर्य जनता को समझाया कि हम हिन्दू (गुलाम) नहीं आर्य हैं। उन्होंने इस कार्य को अधिक शक्ति से आगे बढ़ाने के लिये 1875 में आर्य समाज नाम से एक संस्था बम्बई में बनाई और साथ ही एक नारा भी दिया।

'इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तोऽरावण्।।'

अर्थात् लोगों के ऐश्वर्य की वृद्धि के साधन जुटाकर और उनके दुर्गुणों को दूर करते हुए विश्वभर को आर्य बनाओं, इससे सिद्ध होता है कि हम आर्य हैं।

भारत में अन्धकार युग और पुर्नजागरण

जब कोई राष्ट्र किसी अन्य राष्ट्र के शासक के अधीन हो जाता है तो उसका अपना कुछ भी शेष नहीं रह जाता, उसकी आत्मा मृत-प्राय: हो जाती है। यही घटना भारत में भी घटी क्योंकि बारहवीं सदी के अन्त में भारत पर यवनों का शासन आरम्भ हो गया था। इन शासकों का उद्देश्य इस्लाम मत को फैलाना और अपनी सुख सुविधा के लिये आर्य जनता को सताना था। इनके शासन में जन साधारण के लिये न स्कूल, न सड़क, न नहरें, न चिकित्सालय बनवाये गये, केवल शाही कार्यवाहकों के लिये ही थोड़ी बहुत सुविधा थी। न्यायालय भी कहीं थे तो काजी या मुफ्ती लोग मनमाना न्याय देते थे। उन्होंने इस्लाम को ही फैलाया। दण्ड से अथवा लालच देकर जागीरें बक्श कर, उनके धर्म परिवर्तन किये। आर्य परिवारों को जागीरें देकर अपने वैवाहिक रिश्ते भी स्थापित किये। न्यायालयों में इस्लाम मत के अनुसार ही न्याय होता था विधर्मियों के लिये न्याय नाम मात्र का ही था, किसी अन्याय के लिये कोई सुनवाई नहीं थी।

इस काल में शिक्षा तो फारसी भाषा में ही दी जाती थी, क्योंकि शाही दरबार की भाषा फारसी ही थी। आर्य जनता के लिये कोई संस्कृत या नागरी भाषा के विद्यालय नहीं थे। अपितु आर्य साहित्य तो जहाँ से भी उन लोगों को प्राप्त हुआ, जला दिया गया। सब के लिये यदि कोई विद्यालय होता था भी, तो उसमें फारसी ही पढ़ाई जाती थी। उर्दू भाषा बादशाह शाहजहां के समय में प्रारम्भ की गई। यद्यपि यहाँ गौर, खिलजी, गुलाम, सय्यद, लोदी और मुगल वंश के बादशाहों ने शासन किया, उनका जनता के प्रति एक जैसा ही व्यवहार रहा। जो मुसलमान

बने उनको कुछ सुविधा न्याय के सम्बन्ध में अधिक थी।

इस काल में वास्तुकला का विकास अवश्य हुआ। मुगलकाल में उन्होंने अपनी सुविधा के लिये बड़े-बड़े भवनों का निर्माण कराया जैसे ताजमहल संसार के आश्चर्यों में से एक माना जाता है। मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनवाने और इस्लाम को फैलाने की बात तो सभी ने की।

इस काल में आर्यों की दशा बहुत शोचनीय हो गई थी। इन की तकनीकी विद्या नष्ट प्राय: हो गई थी, उद्योग धन्धे कम होते जा रहे थे। केवल खेती से सम्बन्धित ग्रामीण धन्धे चालू थे। धार्मिक कार्यकलाप भी कम हो गये थे। उनमें अन्धविश्वास बढ़ गया था। छुआछूत का भंयकर रोग फैल गया था। नारियों का सम्मान बचाना कठिन हो गया था। पर्दा-प्रथा, अशिक्षा, बलि प्रथा, सतीप्रथा, विधवा विवाह न होना आदि अनेक कुरीतियाँ फैल गई थी। हम उन अपने पूर्वजों के आभारी हैं जिन्होंने इस आपत्ति काल में भी कुछ न कुछ शिक्षा और धार्मिक कर्म चालू रखा और कुछ साहित्य भी बचाया।

मुगलों के शासन का सूर्य (1526 ई0 से 1707 ई0 तक) अनुदारवादी औरंगजेब की मृत्यु के बाद अस्तांचल को चल दिया। भारत में ईस्ट इंडिया, फ्रान्सिसी, डच और पुर्तगाल की कम्पनियाँ मुगल काल में ही व्यापार करने आ गई थी। इनमें से भी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इन अन्य कम्पनियों को पीछे ढ़केल दिया। मुगल शासन नष्ट प्राय: हो गया और नवाबों ने अपने छोटे-छोटे इलाकों पर स्वतंत्र रूप से शासन करना शुरू कर दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने नवाबों की कमजोरी का लाभ उठाया और शासन की ओर भी हाथ बढ़ाया और धीरे-धीरे इन्हें परास्त कर शासन करने लगी। उधर इंगलैंड की सरकार ने ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन समाप्त कर इंगलैंड की सरकार का शासन ही अपना प्रतिनिधि यहाँ भेजकर शुरू कर दिया। भारत अब अंग्रेजों का उपनिवेश

हो गया। उन्हें यहाँ शासन चलाने के लिये पढ़े लिखे लोगों की आवश्यकता पड़ी। अपने देश से इतनी संख्या में और पढ़े लिखे लोग बहुत महंगे पड़ते। इसलिये कुछ उच्च पदों को छोड़कर उन्होंने शेष यहीं से प्राप्त करने के प्रयत्न में स्थान-स्थान पर दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह मील पर प्राईमरी से मिडिल वर्नाक्युलर स्कूल खोले और जिलों में एक या दो-दो हाईस्कूल, इण्टर कॉलिज खोले। कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में 1835 ई0 में विश्वविद्यालय स्थापित किये, यह मैकाले की शिक्षा प्रणाली कहलाती है।

अंग्रेज सरकार ने अपना व्यापारिक कारोबार बढ़ाने के लिये सड़के, पुल, नहरें, डाकतार विभाग बनाये, और 1853 में बम्बई से ठाणे तक पहली भारतीय रेल चला दी। ये सब विकास के साधन भारतीयों के लिये गुणकारी सिद्ध हुए। **'कुबड़े के गुण, लात लग गयी'** की कहावत चरितार्थ हो गई।

भारतीय शिक्षित हुए, ज्ञान बढ़ा, अंग्रेजों की शासन प्रणाली देखी, उनका विधान पढ़ा। विलायत (इंगलैंड) जाकर उनके विश्वविद्यालयों से कानूनी डिगरियाँ प्राप्त की। इन लोगों ने फिर भारत में अपना एक संगठन बनाया, जिसमें सब ने मिलकर विधान सभाओं में अपने लिये कुछ स्थान सदस्य रूप में मांगे। इन लोगों में सबसे पहले अंग्रेज सर ह्यूम और एनिबेसेंट, सुरेन्द नाथ बैनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, राजा राम मोहनराय, दादा भाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक आदि थे। उन्होंने सन् 1885 ई0 में बम्बई में राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन किया। सर ह्यूम इसके महामंत्री सन् 1906 तक रहे। बाल गंगाधर ने एक नारा दिया 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'। भारतीयों ने आजादी के लिये अंग्रेजों से युद्ध का बिगुल बजा दिया, इन लोगों में कुछ क्रान्तिकारी विचार धारा के लोग थे जैसे सुभाष चन्द्र बोस, खुदी बोस, चन्द्र शेखर आजाद, भगत

सिंह, असफाकुल्ला खां, रामप्रसाद बिस्मिल आदि। उधम सिंह जैसे लोगों ने इंगलैंड पहुँचकर ही जलियां वाला कांड (1919 में) का बदला लिया। काकोरी स्टेशन पर 9/8/1925 को सरकारी खजाना लूटा गया। इनसे भी अंग्रेज सरकार भयभीत न हुई। इधर उदारवादी कांग्रेस की बागड़ोर 1920 में गाँधी जी के हाथ में आ गयी, उन्होंने सत्य और अहिंसा द्वारा, जिसका उनको दक्षिणी अफ्रीका में अनुभव हो गया था, कांग्रेस का नेतृत्व किया और अन्त में भारत स्वतंत्र तो हुआ परन्तु अंग्रेजों की कूटनीति से दो भागों में बंट गया। पाकिस्तान 14 अगस्त और भारत 15 अगस्त सन् 1947 को स्वतंत्र हुए। इस प्रकार इस अन्धकार युग का अन्त हुआ। पाठकों, मेरा विचार तो यह है कि यदि भारत में अंग्रेजों का शासन न आरम्भ होता तो भारत अभी और कितने समय तक गुलामी के शिकंजे में फंसा रहता, क्योंकि विकास की जड़, शिक्षा मुस्लिम काल में उखड़ चुकी थी, अशिक्षा फैल चुकी थी।

प्रकृति का नियम है कि रात के पश्चात दिन और दिन के पश्चात रात आती है अथवा यह कहो कि दुःख के बाद सुख का अनुभव होता ही है। भारत में जब आर्य जाति परतंत्रता के कारण अनेक कष्ट उठा रही थी, विकास का मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था, चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। उसी समय भारत के शासन की बागड़ोर मुसलमान बादशाहों के हाथों से छूटकर अंग्रेजों के हाथों में धीरे-धीरे आ ही रही थी, तो प्रभु ने आर्य जाति के उद्धार हेतु एक महान विभूति को गुजरात प्रान्त के मौरवी जनपद में, टंकारा नाम के गाँव में जन्म दिया। इस समय अशिक्षा के कारण अनेक प्रकार के अन्ध विश्वास और मूर्ति पूजा पूर्ण से आर्य जाति में व्याप्त थी। छुआछूत के कारण आर्य जाति अधोगति को पहुँच गई थी। लोग वेदों का नाम तक भूल गये थे। श्रद्धेय स्वामी दयानन्द ही वह विभूति थे जिनका जन्म तिवारी ब्राह्मण परिवार में सन् 1824 ई0 में इस गाँव में हुआ। जब स्वामी जी चौदह वर्ष के हुए

तो उनको अपने पिता के साथ भगवान शंकर की पूजा करने का अवसर मिला तो उस दिन उनको मूर्ति पूजा के प्रति जो आस्था थी, वह समाप्त हो गई। परिवार में कुछ ऐसी घटनाऐं भी हो गई जिनसे उनको सन्यास लेने की प्रेरणा मिली और वह सन्यासी बन गये। वह प्राचीन विद्यालयों अर्थात् वनों की ओर ज्ञान प्राप्त करने के लिये चल दिये। इस कोपिनधारी सन्यासी को किसी भी साधु महात्मा से जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त हुआ उसे प्राप्त करते हुए अन्त में हिमालय की कन्दराओं का भी भ्रमण किया। उनको इससे सन्तुष्टि प्राप्त नहीं हुई। जब उनको स्वामी बिरजानन्द जी के बारे में ज्ञात हुआ तो वह मथुरा पहुँचे और स्वामी जी का द्वार खटखटाया और उनके शिष्य बन गये। स्वामी बिरजानन्द संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनसे इन्होंने तीन-चार साल की अवधि में अष्टाध्यायी और अन्य आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया और स्वामी से वेदों का भाष्य करने की पूर्ण विधि प्राप्त की।

जब स्वामी जी को आर्य साहित्य का पूर्ण ज्ञान हो गया तो उन्होंने अपने गुरु को गुरु दक्षिणा के लिये निवेदन किया तो गुरु बिरजानन्द जी ने एक संकल्प कराया कि (में जो माँगूगा, वह दोगे। स्वामी जी ने संकल्प किया। गुरु बिरजानन्द जी ने कहा अच्छा वत्स) ''अपना शेष जीवन वेद प्रचार, पाखण्ड खण्डन, मानव जाति के उद्धार तथा प्राचीन आर्य सभ्यता के विस्तार में लगाना''। स्वामी जी अपने गुरु को गुरु दक्षिणा देकर निकल पड़े। स्वामी जी इसी कार्य को करते हुए जनता को शिक्षा देते हुए जगत प्रसिद्ध कुम्भ मेले में हरिद्वार पहुँच गये और पाखण्ड खण्डनी पताका गंगा तट पर खड़ी कर प्रचार करने लगे। लोगों के प्रश्नों के उत्तर भी दिये। मेला समाप्त होते ही वह फिर वेद प्रचार में लग गये। इस कार्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिये उन्होंने सन् 1875 ई0 में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। समाज के नियम बनाकर सदस्यों की संख्या बढ़ाई। स्वामी जी ने वेद प्रचार अछूतोधार, स्त्री शिक्षा, विधवा आश्रम,

विधवा विवाह, विद्यालय, औषधालय, अनाथालय और कन्या पाठशालायें खोलकर आर्य जाति के विकास का लक्ष्य रखा। उन्होंने आर्य जगत को बहुत साहित्य दिया, भाष्य के रूप में भी और मूल रूप में भी।

सन् 1883 में स्वामी जी का स्वर्गवास हो गया। इसके पश्चात इनके अनुयायियों ने बहुत कार्य किया। आर्य समाज का विस्तार और कार्य इतना हुआ कि अंग्रेजी सरकार को यह सन्देह हो गया कि यह धार्मिक संस्था नहीं अपितु, राजनीतिक संस्था है। इसके सदस्य राष्ट्र प्रेमी तो थे ही। लगभग 1927 तक संसार के भिन्न-भिन्न देशों जैसे अमेरिका, इंगलैंड, फ्रांस, अफ्रीका, मॉरिसस, अरब, सीरिया, अफगानिस्तान, चीन, हांगकांग, सिंगापुर आदि में लगभग 1700 आर्य समाज इकाईयाँ कार्य कर रही थी। सन् 1939 में आर्य समाज ने भारत में एक बहुत बड़ा सत्याग्रह आन्दोलन दक्षिणी हैदराबाद में किया। क्योंकि हैदराबाद के नवाब ने तथा कथित 'हिन्दूओं' पर अत्याचार शुरू कर दिये थे एवं उनके धार्मिक रीतिरिवाजों में विघ्न डालने लगा था। अंग्रेज सरकार चुप रही यद्यपि रियासत हैदराबाद कुछ अनुबन्धों के साथ उसके अधीन ही थी। आर्य समाज ने उसको विवश कर दिया कि वह इस प्रकार का बन्धन न रखे। अंततः आर्य समाज इस में सफल हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले आर्य समाज ने बहुत कार्य किया और आर्य जाति में जान डाल दी। आर्य समाज संस्थाओं को जनता ने दान भी बहुत दिया क्योंकि कार्यकर्ता धर्मनिष्ठ लोग थे। और वे यह भी जानते थे कि यदि सरकार हमारी संस्थाओं को अधिक सहायता न भी दे तो भी ये संस्थाएँ अपना कार्य सुचारू रूप से चला लेंगी।

इसी समय डाक्टर हेडगेवार ने सन् 1925 ई0 में विजय दशमी के दिन नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की थी। इस संस्था के घटक सभी मतों के मानने वाले हो सकते हैं। यह संस्था सब भेदभाव

छोड़कर आपदा के समय जनता की सेवा करती है। इस संस्था के घटक प्रतिदिन अनुशासन पूर्वक एक नियत स्थान पर एकत्र होकर प्रातः काल या सायं काल में खेलकूद व्यायाम और शरीर रक्षार्थ लाठी चलाना भी सीखते हैं। इस संस्था की प्रार्थना में हिन्दू शब्द का प्रयोग है क्योंकि इस का जन्म ही उस समय हुआ जब सब ही अधिकता से हिन्दू कहलाते थे। यह परतंत्रता काल था। अब स्वतंत्र भारत में आर्यों का कर्तव्य है कि वे इस संस्था के घटकों को हिन्दू शब्द का अर्थ तर्क संगत समझावें और इसके स्थान पर आर्य का प्रयोग करने का आग्रह करें, और अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित कर भारतीय वैदिक संस्कृति की, उनके साथ चर्चा करें, ये लोग अपनी प्रार्थना में 'हिन्दू' के स्थान पर 'आर्य' लिखें और बोलें। इसी में देश की भलाई है।

स्वतन्त्रता के बाद

जब भारत में 26 जनवरी सन् 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ तो भारत सम्प्रभु सत्ता सम्पन्न राष्ट्र घोषित हो गया और भारत में जनता द्वारा, जनता का राज, जनता के लिये स्थापित हो गया। निर्वाचित सरकार ने देश के विकास के लिये पंचवर्षीय योजना बनाकर विकास का मार्ग प्रशस्त किया। हर क्षेत्र में विकास हो रहा है। शिक्षा का क्षेत्र ही ऐसा है जिसमें सरकारी शिक्षा नीति के कारण साक्षरता तो बढ़ रही है परन्तु सत्तर प्रतिशत ग्रामीण जनता उच्च शिक्षा से वंचित हो रही है क्योंकि सरकार ने कई प्रकार की शिक्षा पद्धतियाँ चला रखी हैं जैसे सी0बी0एस0ई0, आई0सी0एस0ई0 और प्रान्तीय बोर्ड जो बेसिक शिक्षा से सम्बन्धित हैं। सी0बी0एस0सी0 तथा आई0सी0एस0ई0 में माध्यम अंग्रेजी है। ये दोनों गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा भी संचालित है। इन संस्थाओं की फीस इतनी है कि ग्रामीण जनता में से पाँच प्रतिशत लोग ही किसी प्रकार अपने बच्चों का व्यय वहन कर सकते हैं। बेसिक स्कूलों के छात्र उनकी तुलना में अधूरे रहते हैं। इस पर सरकार उन माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या के अनुसार अध्यापकों की नियुक्ति नहीं करती, न ही अवकाश प्राप्त अध्यापकों की ही पूर्ति की जाती है। अतः सरकार को चाहिए कि सब भारतवासियों के लिये एक ही शिक्षा पद्धति रखे। शिक्षा का व्यवसायिककरण न करें, न गैर सरकारी संस्थाओं को करने दें। तब ही सब के लिये एक अवसर वाला सिद्धान्त ही लागू समझा जायेगा।

सभी मतों के मानने वाले लोगों के लिये एक ही कानून लागू होना चाहिए केवल पूजा पद्धति को छोड़कर, पूजा जिस रूप में कोई करता है करे, कानून को उसमें बाधक नहीं होना चाहिए परन्तु उसमें भी हत्या न हो।

प्रजातान्त्रिक शासन में स्वतंत्रता के 56 वर्षों में विकास तो ठीक हुआ परन्तु भ्रष्टाचार ने अपने परव सीमा से अधिक बढ़ा लिये। अस्सी प्रतिशत सरकारी या गैर सरकारी कार्य बिना उत्कोच (घूस) के नहीं होते। राजनीतिक और प्रशासनिक सभी लोग इसमें खूब गौते लगा रहे हैं।

हमारे सभी राजनीतिक नेता यदि राष्ट्र प्रेमी एवं कर्तव्यनिष्ठ हों तो सब ठीक हो जाये परन्तु इन राजनीतिक नेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों में तो कुछ तो भ्रष्टाचारी ही नहीं, देश द्रोही भी हैं। वे जनता को लूटकर और सरकार को धोखा देकर, कानून का सहारा लेकर विदेशों में अपने बेनामी खातों में, उनके बैंकों में जमा करते हैं जिससे उस देश का ही विकास होता है। हमारे देश में तीन या चार से अधिक दल होना भी भ्रष्टाचार की जड़ हैं। निर्वाचन के बाद सरकारों के बदलने का कार्य कहीं न कहीं होता ही रहता है, इस में फिर घूस का बोलबाला रहता है। न्याय बिक रहा है, सूर्य अस्त के बाद मार्ग बन्द हो जाते हैं क्योंकि लुटेरों का भय है। यह है हमारी स्वतंत्रता का दृश्य। ऐसी परिस्थिति में मंत्री मंडल कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या का 10 या 15 प्रतिशत से अधिक न रहे। दलों की अधिक संख्या के कारण हर दल का अध्यक्ष मंत्री बनना चाहता है, इसी कारण पाँच साल स्थिर सरकार सुचारू रूप से काम नहीं कर पाती। प्रशासनिक अधिकारियों में घूसखोरी को खत्म करना होगा। इस देश की सर्वोच्च संस्था न्यायपालिका ही कुछ कर सकती है।

21 वीं सदी में आर्य

इस भ्रष्टाचार के युग में आर्यत्व को बचाना कठिन हो रहा है। इस रोग में आर्य भी अछूते नहीं रहे क्योंकि दिखाई दे रहा है कि आर्य संस्थाओं में भी अधिकारी वर्ग इस रोग से ग्रस्त है। इसके होने पर भी आर्यों का कर्तव्य है कि वे महर्षि दयानन्द जी के दिखाये हुए मार्ग पर चल कर ''कृवन्तो विश्मार्यम्'' अर्थात् आओ विश्वभर को आर्य बनायें। वास्तविकता तो यही है कि प्राचीन काल में इन मतमतान्तरों के उद्भाव से पहले संसार में आर्य जाति और सनातन धर्म ही था, बीच में अन्य मतों के बन जाने से आर्य जाति के लोग अपने को आर्य कहना ही भूल गये, यह समय का प्रभाव था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भारतीयों को जगाया। इस समय शहरों में, गाँव-गाँव में आर्य समाज मन्दिरों की स्थापना हो रही है परन्तु उनके कार्यकर्ता वर्ष में तीन या दो दिन ही आर्य शब्द का प्रयोग करते हैं शेष दिनों में हिन्दू (गुलाम) शब्द का ही प्रयोग करते हैं, जो कि नहीं होना चाहिये। यह फारसी का शब्द है संस्कृत का नहीं बन्धुओं, प्रतिदिन के प्रयोग में आर्य शब्द प्रयोग कीजिये। जिनमें यथानाम तथागुण हो। भारत के सभी लोग, एक प्रतिशत को छोड़कर आर्यों की ही सन्तान हैं। मत परिवर्तन कर, कोई जैन, कोई बौद्ध, कोई इस्लाम या मसीहा आदि मानने वाले बन गया। मूलरूप से तो सब आर्य ही हैं। सरकारी पत्रावली में हिन्दू के स्थान पर आर्य, हिन्दू धर्म के स्थान पर वैदिक, हिन्दुस्तानी के स्थान पर भारतीय लिखवाईयें। अपने बच्चों को सवेरे उठकर बड़ों को नमस्ते करने का अभ्यास करायें। आप स्वयं अपने पूर्वजों को उनके सामने नमस्ते कीजिये। पति-पत्नी भी आपस में ऐसा ही करें और पति-पत्नी यदि एक दूसरे को सम्बोधन करें तो श्रीमान या श्रीमती अथवा नाम के साथ जी का प्रयोग करें। बच्चों को माता, पिता, दादी, बाबा, ताऊ, ताई, बुआ, फूफा, मामा, मामी आदि का सम्बोधन करना

सिखाइयें। मम्मी, आन्टी आदि छोड़िये, नकलचियों की नकल मत कीजिये। नकल करो तो अच्छे गुणों की करो। बच्चों के नाम सार्थक रखें, न कि बिल्लू, पिल्लू आदि। जेठ, देवर, मौसा, मौसी, चाचा, चाची, जेठानी, देवरानी आदि जो भारतीय रिश्ते हैं उनका प्रयोग सीखें और करें। जो भी ज्ञान विज्ञान भाषा सीखनी हो, पूर्ण रूप से सीखें, रिश्ते इसमें बाधक नहीं।

पाश्चात्य सभ्यता की भौंडी नकल कर भारतीय नारी तो अर्ध नग्न ही नहीं पूर्ण नग्न और लज्जाहीन होती जा रही है। केवल वस्त्र नाम मात्र के ही रह गये हैं। इस से प्रतिदिन बलात्कार की घटनायें बढ़ रही है। स्त्री का सम्मान नष्ट हो रहा है वह स्वयं बालों को बखेर कर अन्य प्रसाधनों का प्रयोग कर गर्त की ओर जा रही है। भारतीय नारी माता, बहिन और लज्जाशील होने के कारण भारतीय संस्कृति में सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त किये थी। बहिनों उसी पद को प्राप्त करो कि जिससे हर व्यक्ति आप को श्रद्धा से देखें और आदर करें। पाश्चात्य सभ्यता को अपनाकर अपना सम्मान मिट्टी में मत मिलाओं, हम आर्य हैं हमारी संस्कृति में पर्दा नहीं परन्तु लज्जाशीलता है यही एक आर्या का विशेष गुण है। स्वयं विदुषी बनो जिससे आपकी सन्तान योग्य बने क्योंकि माता, माता ही नहीं, माता के साथ गुरु भी है, वह अपनी सन्तान को जैसा चाहे बना सकती है। हमारे यहाँ ऐसे बहुत उदाहरण है। आर्य पुत्रियों आप अधिकारों की मांग करती हो, आपको तो वैदिक संस्कृति में सबसे पहला स्थान मिला है। आप वीरांगना हो। अपने आपको सम्भालो और भारत को सुधारो। वेशभूषा आर्य संस्कृति मानव के विकास में भी बाधक नहीं होती। साधारण जीवन पद्धति और उच्च विचार की कहावत ही ठीक है। हमारे दिवंगत राष्ट्रपति सर्व पल्ली राधाकृष्णन, अपने समय के भारत में अंग्रेजी के पहले विद्वान थे। दूसरे स्थान पर डा0 प्रसिद्ध उर्दू शायर फिराक गोरखपुरी और आधी अंग्रेजी जानने वाले हमारे भारत के प्रथम प्रधान मंत्री स्व0 पं0 जवाहर लाल नेहरू माने जाते थे। राधा

कृष्णन भारतीय वेशभूषा और संस्कृति की प्रतिमूर्ति थे। उनकी वेशभूषा कहीं बाधक नहीं बनी। स्वतंत्रता के बाद भारत में धर्म के नाम पर अन्ध विश्वास और बढ़ गया है। जैनी ऋषभ जी की मूर्ति, बौद्ध बुद्ध जी की मूर्ति, मुसलमान पीरों के मजार और मस्जिदें, आर्य शनि मन्दिर, महादेव शंकर का मन्दिर छोटे गाँव में एक नहीं कई-कई पूजा स्थल बनाने की होड़ लगी हुई है। ये सब भूल गये कि महापुरुषों और ऋषियों ने क्या कहा, उसको ध्यान में रखकर मानवता की सेवा करो। महापुरुष ने कहा है-

दर्दे दिल पास से वफा, जज्बये ईमा होना।
यही इन्सानियत है और यही इन्सां होना।।

जिसके दिल में दूसरों के प्रति सहानुभूति है जो विश्वास पात्र है जिसके अन्दर ईमान का अर्थात् नेकी का जज्बा है उसी में मानवता है और वह मानव है।

ऋषि ने कहा है-

इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तोऽरावणः।।

दुर्गुणों का नाश और ऐश्वर्य की वृद्धि करते हुए, सारे संसार को आर्य (गुणवान व्यक्ति) बनना चाहिये।

ईश्वर सर्वव्यापक है। सब धर्मों के लोग इसे मानते हैं वे सत्य को मानते ही हैं वहीं ईश्वर है। अतः उसके लिये मन्दिर बनवाने की आवश्यकता नहीं। केवल अपनी गोष्ठियाँ करने के लिये मन्दिर (भवन) बनाना, हो तो ठीक है। ईश्वर अवतार नहीं लेता यदि वह अवतार ले तो वह सर्वव्यापक नहीं हो सकता। लोगों का भ्रम है कि भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि जब धर्म की हानि होती है तो मैं जन्म लेता हूँ। पहली बात तो यह है कि भगवान कृष्ण मानव थे, उनके पत्नी व पुत्र आदि सब थे। वह ओ३म नहीं थे, वह तो महान गुणवान योगीराज थे।

उन्होंने गीता जैसा अनुपम ग्रन्थ संसार को दिया। उनके इस श्लोक 'यदा यदा हि धर्मस्य गलानि भर्वति भारत। अम्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।' का अर्थ गलत लगाते हैं। इसमें उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की है कि हे प्रभु! जब कभी भी जहाँ कहीं भी इस संसार में अधर्म बढ़े तो उस का अन्त करने के लिये मुझे वहाँ जन्म दें अर्थात मेरा जन्म वहाँ हो। जन्म मरण का कार्य तो प्रभु ही के हाथ में है मानव के नहीं। कोई भी मानव ऐसी प्रार्थना कर सकता है।

सम्भवत: लोगों के मन में यह भाव हो कि सब उन्हें भगवान कहते हैं। बन्धुओं! भगवान् एक सम्बोधन है विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिये सम्बोधित किया जाता है जिसमें छह कलायें (गुण) प्रचुर मात्रा में हों। भगवान् कृष्ण तो सोलह कला अवतार थे और रामचन्द्र जी बारह कला अवतार थे। अवतार शब्द का अर्थ यहाँ निपुण होने से हैं। कृष्ण जी में निम्न गुण थे।

1. ऐश्वर्य　　2. अध्यात्म
3. मल्लविद्या　　4. योद्धा
5. वाद्क　　5. गोवश प्रेमी
7. सच्चे मित्र　　8. ज्ञानी
9. सारथी　　10. नृत्य कला निपुण
11. सौन्दर्य सम्पन्न　　12. कूटनीतिज्ञ
13. महान योगी　　14. महान उपदेशक
15. प्रवक्ता　　16. मानव मात्र का सेवा भाव

भगवान राम में चार गुणों की प्रचुरता नहीं थी।

1. मल्ल विद्या　　2. वादन
3. नृत्य कला　　4. सारथी

आर्य बन्धुओं! विचार करो अपने कर्तव्यों का निर्धारण आप करो।

यज्ञोपवीत

यह एक सूत्र है जिसको जनेऊ भी कहते हैं। यह कोई विशेष धार्मिक चिन्ह नहीं है। जैसी इसकी रचना है और जो इस से लाभ है वे तो सभी मानव के लिये हैं। परन्तु इस का प्रयोग कुछ ही जातियों तक रूढ़िवादिता के कारण धर्म के चिन्ह रूप में हो रहा है। कहते हैं कि इसके नियम कठिन हैं उनका पालन करना कठिन है।

परन्तु ऐसा नहीं है, पहनने वाले को जो प्रतिज्ञाऐं करनी होती हैं वे तो सब को बिना पहने ही करनी चाहियें। पहनने से वे प्रतिज्ञाऐं मानव को याद रहती हैं और इससे हमारे स्वास्थ्य की रक्षा भी होती है क्योंकि इसकी रचना हमारे पूर्वजों ने वैज्ञानिक रूप से, वेदानुकूल की है। अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में मानव के शरीर और रोग के उपचार का वर्णन है। इसी में रक्त, मॉस, मज्जा, अस्थि और नाडियों के बारे में बताया गया है। इस प्रकार प्रत्येक मानव के शरीर में छयानवें मुख्य नाडियाँ हैं जिनके आधार पर यह सूत्र बनाया जाता है और इसकी लम्बाई पहनने वाले स्त्री या पुरुष के बायें हाथ की चार उंगलियों के छयानवे चक्कर अर्थात् छयानवे चव्वों के बराबर होती हैं।

रचना: - तकली या चरखें से कते हुए सूत से की जाती है। तकली या नकवे के द्वार बनी नीचली के धागे का एक सिरा पकड़ कर बायें हाथ के अंगूठे के अगले पौर से उंगली के पहले पौर अर्थात् हथेली के पास दबाकर छयानवें लपट लगायें। पहले 32 चक्करों के बाद सुविधा के लिए किसी रंग से चिन्ह लगा दें, फिर 32 चक्कर लगाकर चित्त लगाये, फिर छियानवें पूरे कर ले। फिर इस सूत को उमेठ (ऐठ) के तिहरा कर लें, और इसके दोनों सिरों को दो-दो इंच रखकर तीन लडों वाला कर लें, तीनों लडें बराबर लम्बाई में रहें। पहली गांठ, दूसरी गांठ, फिर तीसरी

गांठ लगाये। ये गांठे पहनने वाले के लिये उसके अपने जीवन में क्या-क्या कर्तव्य है। उसके लिये संकल्प की गांठ है। पहली गांठ माता-पिता के ऋण से उऋण होने के लिये यह सिद्ध है, दूसरी ऋषि अथवा गुरु ऋण से उऋण होने के लिये है, तीसरी राष्ट्र ऋण से उऋण होने के लिये है। बालक या बालिका को शिक्षा के लिये अल्पायु अर्थात् 8-9 वर्ष में विद्यालय में गुरु के पास भेजा जाता है। तब ही से यज्ञोपवीत पहनने का क्रम आरम्भ होता है, कुछ लोग बाद में भी युवकों या युवतियों को यज्ञोपवीत पहनाते हैं। पहली गांठ का अभिप्राय है कि यज्ञोपवीत धारी अपने माता-पिता की उनके जीवन पर्यन्त सेवा करे और गृहस्थ बनकर सृष्टि क्रम को चलायें। दूसरी, गुरु से जो ज्ञान प्राप्त किया या ईश्वर प्रदत्त बुद्धि से कोई आविष्कार या कोई अन्य ज्ञान प्राप्त किया है, उसको संसार की भलाई के लिये ओरों को भी बतायें, ऐसा न हो कि मत्यु को प्राप्त हो जाये और विद्या साथ ही चली जाये, तो वह गुरु ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। इस प्रकार तीसरी गांठ, यह संकल्प बताती है कि जिसमें राष्ट्र यज्ञोपवीत धारी ने जन्म लिया, जिसकी मिट्टी, जल, वायु आदि से जीवन यापन कर रहा है उसकी रक्षा के लिये तन, मन, धन से तत्पर रहे, क्योंकि जिसका अपना राष्ट्र नहीं होता उसका जीवन निरर्थक है भारतीयों को तो इसका कई सौ वर्ष का अनुभव है।

कुछ लोग इन गांठों के भिन्न-भिन्न अर्थ बताते हैं। इसकी रचना के कारण यह स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालता है, क्योंकि बायें कन्धे पर धारण किया जाता है और इसी ओर हृदय का भी स्थान है तो यह रूद्राक्ष की भांति उसकी गति को भी प्रभावित करता है। यज्ञोपवीत धारी जब लघुशंका या शौच जाता है तो इसे अपने दोनों कानों की जड़ों में कस कर लपेटे, जिससे कान की नाड़ियाँ दब जायें। बायें कान पर दो बार लपेटकर ठुड्ढ़ी के नीचे से शेष भाग से दाहिने

कान पर भी वैसे ही करें, इससे मूत्र सम्बन्धी रोगों का निवारण हो जाता है। क्योंकि इन नाड़ियों का सम्बन्ध शरीर की मूत्रेन्द्रियों से होता है। ब्रह्मचर्य पालन से कान की पपड़ी की नाड़ी बहुत सहायक होती है। मानव को काम का प्रकोप हो तो दोनों हाथों से दोनों कानों की पपड़ियाँ दबाकर मल दिया जाये तो काम वासना शान्त हो जाती है। खुंटीदार खड़ाऊ भी इस में लाभदायक होती है इसी लिये प्राचीन काल में इनका प्रयोग था। यदि किसी के हाथ पैर में किसी विषैले कीड़े ने काट लिया हो या चोट लगने से रक्त स्राव हो रहा हो तो यज्ञोपवीत को तोड़कर रक्त पर तत्काल के लिये काबू किया जा सकता है।

यदि यज्ञोपवीत खण्डित हो जाये या अपने किसी पूजनीय देवी देवता का चित्र या मूर्ति या कोई धार्मिक ग्रन्थ के कारण निरर्थक हो जाये या यज्ञ हवन कथाओं में फूल पत्ते अन्य बची खुची चीजों और खण्डित देवी देवताओं के चित्र तथा मूर्ति को कूड़े पर, या कुऐं में या गंगा माता आदि नदियों में डालें, तो यह पाप है। उसको अग्नि देव को समर्पित कर दें और राख भूमि में गाड़ दें, इससे न प्रदूषण फैलेगा, न धार्मिक भावना को ठेस पहुँचेगी। धर्म की विड़म्बना है जो अन्ध विश्वास के कारण है जहाँ तक देवताओं का प्रश्न है उनमें से कुछ जीवित हैं और शेष जड़ हैं। जीवित देव ये हैं जिनका मान सम्मान करना, मानव का धर्म है। माता-पिता (सास, ससुर) गुरु, अतिथि, विद्वान किसी भी विद्या का हो, महापुरुष पतिव्रता स्त्री, पत्नी व्रत पुरुष। देवता वही है जो देता है। जड़ देवता है, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, वायु, जल, अन्न और अग्नि आदि इन देवताओं के पास अपार शक्ति है देने की परन्तु मनुष्य को चाहिए कि ईश्वर प्रदत्त बुद्धि से कार्य कर लाभ उठायें। ये स्वयं देने नहीं आते। जैसे सूर्य से सौर ऊर्जा, पृथ्वी से खनिज, चन्द्रमा से औषधियों के रस, वायु से पंखे आदि जल से विद्युत आदि, अन्न से शारीरिक शक्ति, अग्नि से भी बहुत कार्य किये जाते हैं। इसमें भेदक शक्ति है इसको आगे, यज्ञ

प्रकरण में बताया जायेगा। अन्य देवता, अन्ध विश्वास के कारण, जिनकी प्रतिमा बनाकर उनमें प्राण प्रतिष्ठा का बहकावा कर या करके अपनी जीविका का साधन बना लिया। भला प्राण प्रतिष्ठा तो प्रभु ही कर सकते हैं। वे लोग तो महापुरुष या देवियाँ थीं जिनके पास ज्ञान का भण्डार था। हम उनके गुणों का गान करें और उनके गुणों को सीखें। देखिए महादेव आदि पुरुष कितने बड़े शल्य चिकित्सक, ज्योतिष के ज्ञानी, संगीत विद्या के ज्ञाता, नृत्यकला और लिपि के अक्षर आदि अनेक गुण उन्होंने संसार को दिये। वे अब सृष्टि क्रम के अनुसार इस संसार से चले गये। उनके नाम पर शिवालय बना दिये, पूजा शिवलिंग और जलहरी की करा दी। (सन्दर्भ पद्म पुराण उत्तरखंड अध्याय पृ0 255 व पाताल खंड पृ0 114, कलकत्ता मुद्रित) कहीं कालीदेवी जो एक चिकित्सक थी, उस के मन्दिर बनवाकर, मदिरा, मांस का उसको भोग लगवा दिया। कितना अन्याय है और ऐसे ही देवी देवताओं के मन्दिर उनके बारे में कपोलकल्पित कथाऐं रचकर बनवा दिये। यदि इन देवताओं में शक्ति होती तो क्या इस्लाम धर्म को मानने वाले भारतीय मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवाते और शासन करते अपितु उनको भी आर्यत्व का ज्ञान करा दिया जाता। ये मतमतान्तर होते ही नहीं। यदि समय के प्रभाव से होते भी तो भारतीयों की जो दुर्गति सैकड़ों वर्षों तक हुई, न होती। आर्य बन्धुओं! मूर्ति पूजने (सम्मान) के रूप को बदलों। महापुरुष जिन्होंने संसार के हित में कार्य किया, उनके चित्र या मूर्तियाँ उनकी जीवनी की रचना कराकर अपनी यज्ञशालाओं, पाठशालाओं, चिकित्सालयों, अनाथालयों आदि में लगाओं और उनके प्रति सम्मान की भावना अपने हृदय में रखें। वे भले किसी भी काल में और किसी भी देश, जाति, धर्म के मानने वाले रहे हो।

यज्ञ

यज्ञ को होम अथवा हवन भी कहते हैं। संसार में वैदिक धर्म की एक ऐसी पद्धति है जो संसार में जड़ व चेतन सभी के लिये हितकर है और जो मानव मात्र के लिये हानिकर है उसको नष्ट करती है। यज्ञ के लिये यज्ञ कुण्ड की आवश्यकता पड़ती है। यह लोहे से या भूमि में खोदकर बनाया जाता है। इसकी पेंदी और मुख वर्गाकार होते हैं। इनकी भुजा का परिमाप चार अंगुल और सोलह अंगुल के अनुपात का होता है। दूसरी वस्तु समिधा जो गाये के गोबर के उपलों की हो, या आम, पीपल, बड़, गुलर, देवदास, ढ़ाक, चीड़, खैर आदि वृक्षों की हो। तीसरे धरती का अमृत घी और काष्ठ औषधियों और अन्य पदार्थों से बनी सामग्री जो छह ऋतुओं के अनुसार होती थी परन्तु अब समयानुसार निम्न पदार्थों से बनी सभी ऋतुओं में कार्य करती है। घी और सामग्री की कम से कम मात्रा 50 ग्राम और 200 ग्राम के अनुपात में हो तथा आहुति देने वालो की संख्या के अनुसार बढ़ाई जा सकती है। सामग्री के पदार्थ–छलीरा, तीनों चन्दन चूरा, गिलोय अगर–तगर, इन्द्र जौ, गुग्गल, जावित्री, जायफल, धूप, सरसों, गुलाब के फूल, धान की खील, गूलर की छाल, शखं पुष्पी, गोखरू, वायविडंग, सतावर, खोया, गोला, किशमिश, मुनक्का, चिरौंजी, कुश की जड़, इलायची, उन्नाव, ऑवले, मूंग के लड्डू, राल, मखाने, बेल, वच, नागकेसर, ब्रह्मी चिरायता, छुहारे, बिदारीकंद, ऋतु फल, मुण्डी सेब आदि (यदि प्राप्त हो सकें) से बनी सामग्री हो तो अच्छा है।

अग्नि एक जड़ देवता है जब हम इसको आहूत करते हैं तो यह हमारे अतिथि होते हैं। जिस प्रकार हम अपने अतिथि को आदर पूर्वक उसकी थाली में भोजन परोसते हैं जिससे वह इधर–उधर न गिर जाये

वैसे ही जब अग्नि देवता के थाली रूपी कुंड में घी, या सामग्री की आहूति देते हैं तो हथेली ऊपर करके हाथ की तीन उंगुलियों और अगूठे से सामग्री को कुंड में ऐसे डालें कि वह इधर-उधर न बिखरे। इस अग्नि देवता में ही भेदक शक्ति है जिससे यह उस पदार्थ (जो हम प्रज्जवलित अग्नि कुंड में डालतें हैं।) के गुण को हजार गुणा कर संसार की भलाई हेतु वायु देवता को दे देता है, वायु देवता भी इससे प्राप्त शक्ति को अन्तरिक्ष में बादलों को दे देता है और बादल उसे जल रूप देकर पृथ्वी माता पर वर्षा देता है। यह पवित्र जल जब पृथ्वी के गर्भ में जाता है तो उससे अनेक प्रकार की औषधियाँ भिन्न-भिन्न बनस्पतियाँ उत्पन्न होती है जो मानव मात्र के लिये लाभदायक होती है। वायु और जल जब प्रदत्त शक्ति से सुगन्धित और हानिकर कीटाणुओं से मुक्त हो जाते हैं तो मानव निरोगी रहते हैं।

इसका प्रमाण यह है कि यदि अग्नि कुंड में मिर्च या मांस आदि दुर्गन्ध युक्त पदार्थ डाल दिये जाये तो वातावरण दूषित हो जायेगा और सांस लेना दूभर हो जायेगा। वैदिक संस्कृति के अनुसार मानव की अन्त्येष्टि क्रिया जब की जाती है तो उस समय लकड़ी शव के भार से तीन गुनी और घी सामग्री इस अभाव के युग में यथा शक्ति अधिक से अधिक मात्रा में आहुति रूप में मंत्रों के साथ डाले जायें जिसे से वातावरण में प्रदूषण न फैले। अस्थियों के अवशेष किसी नदी में न डालकर भूमि में गाड़ देना चाहिए जिससे वे इधर-उधर न बिखरी फिरें। पूर्व काल में भारत में यज्ञ करने का बड़ा प्रचलन था। अन्धकार युग में जब शासकों ने बाधायें खड़ी कीं तो हमारे पूर्वजों ने इसका रूप संक्षिप्त कर दिया, अपने घरों में ही पूर्णमासी, अमावस्या, सोमवार, और वृहस्पतिवार के दिन उपलों के बने आग के अंगारों पर घर में, उस दिन बने हलवे, खीर, मोहनभोग, आदि के साथ सामग्री, घी जो दिये जलाने

में लगा होता था, उसी से गायत्री मंत्र पढ़कर पाँच, सात, ग्यारह आहुति देते थे। उससे घर की वायु शुद्ध होती थी, बच्चों को सांस्कृतिक शिक्षा देने का अवसर मिलता था, जिससे वे ज्ञान प्राप्त करते थे। परिवार में ही नहीं अपितु समाज में भी अनुशासन बढ़ता था। बच्चों को स्वाहा शब्द का अर्थ भी समझाया जाता था। लोग इस शब्द के बारे में कहते हैं कि यह अग्नि देव की पत्नी थी, कोई कहते हैं ये सौलह बहिनें थी, अग्नि देव तो स्वयं ही जड़ हैं उनकी पत्नी का क्या अर्थ। स्वाहा शब्द का अर्थ हैं हम सब का कल्याण हो या सब की भलाई हो। सब सुखी रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य ही सौन्दर्य है, ब्रह्मचर्य ही जीवन है, सादा जीवन उच्च विचार ही जीवन शैली है। अंग्रेजी में एक कहावत है जिसका अर्थ है कि यदि धन नष्ट हो गया है तो समझो कुछ भी नहीं गया, यदि स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो समझो सब कुछ गया। यह कहावत ठीक है। यदि मनुष्य के पास ऐश्वर्य हैं परन्तु स्वास्थ्य नहीं तो जीवन दूभर हो जायेगा, इसलिये सदैव स्वास्थ्य रक्षा करना मानव का धर्म है। स्वस्थ व्यक्ति अभाव में भी आनन्द का जीवन जी सकता है।

माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बालक, बालिकाओं को स्वस्थ रहने के नियमों का पालन करने की टेब (आदत) डालें। प्रकृति के सब काम नियम से चलते हैं पशु पक्षी भी शीघ्र सोने ओर शीघ्र उठने का नियम पालन करते है। ऊषा काल में पक्षी डाल पर बैठे शीतल मंद सुगंध निर्विकार वायु में सांस लेकर प्रभु भजन कर स्वस्थ जीवन जीते है। मानव को भी इस नियम का पालन कर सुख का अनुभव करना चाहिए। जल्दी सोओ, जल्दी जागो, स्वास्थ्य धन और बुद्धि पाओ। इसलिये माता-पिता को चाहिए कि वे अपने आठ वर्ष से बड़े बच्चों को शीघ्र सोने और सोते समय प्रभु से प्रार्थना कराये कि हे प्रभु आप मेरी रात को रक्षा करें, मेरे विचार इधर-उधर न जाये और मुझे गहरी नींद आये। सवेरे सूर्य उदय से पहले उठायें और उठाकर उनसे कहें कि अपने मुँह से लाब (राल) लेकर दोनों आँखों में लगायें इस से आँख के रोग दूर रहते हैं। फिर बिस्तर से भूमि पर पैर रखते ही यह मंत्र कहें, "ओइम नमः अस्तु ते भारत माँ" और एक से तीन गिलास तक पानी पीयें (एक लीटर तक) थोड़ा टहलें फिर शौच जाये, पेट साफ रहेगा। बालों को स्वस्थ और चमकीले रखने के लिये शरीर की खुश्की दूर करने

के लिये, नहाते समय दो चार लोटे पानी शरीर पर डाल कर सरसों के तेल की मालिश कर नहा लें, इससे कपड़े भी चिकने नहीं होगें। स्नान करें, प्रभु की प्रार्थना करें, जितना भी समय मिले। इससे उस सृष्टि कर्ता के प्रति अगाध विश्वास हो जायेगा। अपने समयानुकल कोई भी व्यायाम चुन कर नियमित रूप से करें। आधा घंटे का समय काफी हैं। अपने पूर्वजों को प्रात: काल अथवा दूर जाते समय और आते समय नमस्ते भी करें। तप करें अर्थात कठोर कार्य करें। कठिनाईयों का सामना करने से मानव में वीरता और साहस बढ़ता है, भय दूर भागता है, समृद्धि आती है, आलस्य से कायरता और निरूत्साह बढ़ती है जिससे जीवन का आनन्द समाप्त हो जाता है। शत्रु विजय प्राप्त कर लेता है। एक कवि ने कहा हैं-

1 पुरुषार्थ ही से इस दुनिया में सब कामनायें पूरी होती हैं। मन चाहा फल उसनें पाया जो आलसी बनकर पड़ा न रहा।

2 हिम्मत मर्दा मददे खुदा।

वेशभूषा और खान-पान:- वेशभूषा समयानुकूल बदली जा सकती है जब कि भारत वासियों के लिये भारतीय वेशभूषा ही सुखकर है। अन्डरवियर के स्थान पर लंगोट का प्रयोग श्रेयकर है परन्तु तंग कपड़े पहनने में, बालक बालिकाओं सबको कठिनाई होती है अधिक कपड़ों का प्रयोग भी शरीर की कठिन कार्य करने की शक्ति को कम करता है। किसी भी कार्य को छोटा न समझने की वृति, मानव का मानव मात्र की सेवा करने को उत्साहित होना, दिव्य गुण हैं। भोजन में 25 वर्ष की आयु तक अचार, लाल मिर्च, मसालें और अन्य तीक्ष्ण पदार्थो का प्रयोग करना वर्जित है, सवेरे अंकुरित अन्न का प्रयोग लाभदायक हैं। मानव मात्र के लिये सात्विक भोजन ही श्रेयकर हैं। इस से मानव पवित्रता की भावना प्राप्त करता है। भोजन से पहले अंजुली

भर पानी पी लें इस से जठराग्नि. प्रज्वलित होती है।

ऋतु अनुकूल बाजरा, मकई, कांदों , जवार, जौ, चना आदि का प्रयोग रुचिकर और लाभदायक होता है, इसी प्रकार हरी सब्जियों का भी प्रयोग करें। अनेक बीमारियों से बचने के त्रिफले का प्रयोग निम्नलिखित ढंग से करे। त्रिफ़ले में तीन औषधियाँ होती हैं, हर्ड़, बेहडा और आंवला,

इन को साफ़कर सुखाकर, बारीक कूटकर अलग - अलग शीशियों में रख ले और ऋतु अनुसार, हर्ड़ एक भाग, बेहड़ा दो भाग और आंवला चार भाग लेकर अन्य योग के साथ चार या पाँच ग्राम अर्थात् एक छोटी चम्मच सवेरे नित्यकार्यों से निपट कर लें ले। बसन्त ऋतु में अर्थात् 14 मार्च से 13 मई तक शहद से, ग्रीष्म 14 मई 13 जुलाई तक मठ्ठा या पानी से, मठ्ठा उत्तम होता है, 14 जुलाई से 13 सितम्बर तक सँधे नमक जो 1/8 भाग हो, मिला कर पानी से ले लें, 14 सितम्बर से 13 नवम्बर तक गुड़ या खांड मिलाकर पानी से, 14 नवम्बर से 13 जनवरी तक 1/6 भाग सौंठ से पानी के साथ लें, 14 जनवरी से 13 मार्च तक पीपल जो 1/8 भाग हो पानी से लेवें। इस प्रकार से त्रिफले का प्रयोग बहुत ही गुणकारी होता है।

गेहूँ का भुना हुआ चोकर रात को सोते समय गर्म पानी या दूध से लें तो यह भुस्सी इसब्बगोल का कार्य करती है।

माँगलिक कार्यो में पुरोहित और यजमान को सिर ढक कर ही कार्य करना चाहिए, इस में सुरक्षा का ही भाव छुपा है।

टीका विद्वान को अंगूठे से, मृतक को तर्जनी से अन्य को माध्यमिका या अनामिका से और कनिष्का से जल तर्पण के समय लगाते हैं। इसमें भी टीका लगवाते समय सिर के बीच में हाथ रखें या टोपी, तौलिया। सुरक्षा ही इसका भाव है।

कलाई पर कलरवा बाँधना इस में तीन लाल, पील और श्वेत रंग से रंगे धागे होते हैं। ये रंग आध्यात्मिक माने गये हैं। कलाव (डोरी) कलाई पर तीन बार लपेट कर तीन गाँठ देकर बाँध जाता है। यह जनेऊ का प्रतीक है। हाथ की नाड़ी को प्रभावित करता है।

श्री 108 या श्री श्री 1008 नाम के आगे लिखने का अर्थ हैं मानव ने मन की हजारों प्रवृत्तियां हैं इनमें से इतनी पर अधिकार प्राप्त कर लिया है।

उपसंहार

मानव की प्रारम्भिक आवश्यकतायें हैं रोटी, कपड़ा और मकान। यह नारा हम सुनते आ रहे हैं। धर्म का स्थान इसके बाद है।

कहते है एक बार महात्मा बुद्ध के शिष्य कुछ लोगों को बुद्धजी के पास धर्म की शिक्षा देने के लिये लाये, बुद्ध जी ने देखा कि वे भूखे हैं, तो उन्होंने शिष्यों से कहा कि इनको अभी धर्म की आवश्यकता नहीं है। इनको भरपेट भोजन खिलाओ, इन्हें भोजन की आवश्यकता है।

हमको साल में एक दो बार समाचार पत्रों में यह जरूर देखने को मिलता है कि तथाकथित हिन्दू क्यों मुसलमान, ईसाई, बौद्ध आदि बन गये और ये हिन्दू, धर्म के आचार्य सरकार को दोषी बताते और कोसते हुये हड़ताल, चक्का जाम जैसी हानिकार बातें करके हल्ला मचाते हैं और दूसरी ओर शायद वर्षों में कभी एकाध घटना हो जाती होगी कि कहीं कोई मुसलमान, ईसाई, जैन या बौद्ध आदि ने हिन्दू धर्म अपनाया हो! वे हों भी क्यों? ये इनको अपनाते ही कहाँ हैं। यदि वे हो भी जायें तो उनसे ये लोग रोटी-बेटी का व्यवहार कहाँ करते हैं? हाँ यदि इन्हें अवसर मिले तो गुप्त रूप से बुराइयाँ कर सकते हैं।

इन घटनाओं को देखकर या सुनकर इनके कारणों पर ये लोग विचार क्यों नहीं करते। क्या ये लोग अपने पूर्वज आर्यों के इस सिद्धान्त को भूल गये कि वे सारी पृथ्वी को अपना परिवार मानकर व्यवहार करते थे। यह दोष हिन्दुओं में गुलामी के समय की देन है। इनकी सोचने की शक्ति कम हो गयी, नहीं तो क्या इनमें छुआ -छूत जैसा भयंकर रोग पनपता? नहीं। हिन्दुओं में कुछ को छोड़कर बहुत सी जातियों में खान-पान बैठना उठना भी प्रेम पूर्वक नहीं है। प्रजातांत्रिक सरकार के कारण इस ओर कुछ बढ़ोत्तरी हुई है। मुसलमान, ईसाई सब

एक साथ पूजा स्थलों में एक साथ पूजा-पाठ करते हैं कुछ भी भेद भाव नहीं, विवाह अपनी-अपनी उपजातियां में करते हैं, यदि दूसरी जाति में करते भी हैं तो कोई बड़ा विरोध नही। हिन्दुओं में ऐसा नही, यही ह्रास का कारण है। ये धर्म के ठेकेदार करोड़ों रुपया इधर-उधर से बटोर कर भगवान के रहने के लिये भव्य मन्दिरों का निर्माण कराते हैं और गीत गाते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक है, अगोचर है। प्रभु को इन प्रासादों में बन्द न करो।

इस प्रचुर धन को जीवित निर्धन भगवानों के विकास में लगाओं उनके लिये घर, विद्यालय, चिकित्सालय, अनाथालय, उनके लिये आय के साधन उपलब्ध कराकर उनको क्रियाशील बनाओं। इसी में देश और मानव हित है। फिर यह धर्मान्तरण और छुआछूत जैसे भयकर रोग अपने आप ही नष्ट हो जायेंगे। अपने क्षणिक स्वार्थ में पड़कर गीता का ज्ञान मत भूलों- "जैसे कर्म करोगे वैसे फल देगा भगवान, यह है गीता का ज्ञान"। कुछ भारतीयों को छोड़ कर सभी भारतीयों के पूर्वज आर्य ही थे भले ही भारतीय भिन्न-भिन्न मतों को मानते हों, हैं तो, आर्य ही। अत: सभी को श्रेष्ठ गुण सम्पन्न तथा देश प्रेमी होना चाहिये।

हे भारतीयों! जिस भारतीय वैदिक संस्कृति पर आप गर्व करते है, उसका डंका एक बार फिर संसार में, अपने त्याग, तपस्या और सत्य के आधार पर बजा दो। हमारा देश अब एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र है, इसका अब अपना तिरंगा ध्वज है जो रात-दिन लहराता हुआ आप को त्याग सत्य और समृद्धि की ओर बढ़ने का संकेत करता रहता है। इसका अपना राष्ट्र गान भी है जो उचित समय पर सभी भारतीयों द्वारा सम्मान सहित गया जाता है। परन्तु परतन्त्र भारत में जब प्रिंस आफ वेल्स आये थे और उन्होंने किंग जार्ज मेडिकल कालेज लखनऊ का शिलान्यास किया था तो उनके सम्मान में यह गान गाया गया था। इसमें

प्रथम भारतीय नोबल पुरस्कार विजेता श्री रवीन्द्रनाथ ने अंग्रेजी सरकार के वैभव का बखान किया है। अब भारत स्वतन्त्र है। सिन्ध अब भारत में नहीं है और कश्मीर अब भारत में है इसका वर्णन इसमें नहीं है। भारत भाग्य विधाता प्रभु है या कहो भारत की प्रजा क्योंकि कहा जाता है "आवाजे खलक को नक्काराये खुद समझो।" संविधान समिति ने किस परिस्थिति में इसे राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार किया, यह तो वही जाने परन्तु यदि कभी भविष्य में संविधान में संशोधन हो तो सुझाव है कि इस के स्थान पर बंकिम चन्द चैटर्जी द्वारा रचित 'वन्दे मातरम्' राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार किया जाये। उन्होंने इस में भारतीयों के 'मादरेवतन' के गुणों का बखान करते हुए, अपने राष्ट्र के प्रति आदर भाव कर भौगोलिक सीमाओं में नहीं बाँधा है। इससे "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना परिलक्षित होती हैं।

हाँ, सरकार इस ओर भी ध्यान दें। टेलीविजन जहां जनता के लिये ज्ञानवर्धन में वरदान स्वरूप है, वहीं मनोरंजन के नाम पर अन्धविश्वास, अनुशासनहीनता ओर उच्च सभ्यता के नाम पर चरित्रहीनता को भारतीय सभ्यता के विपरीत, बढ़ावा देकर, अभिशाप भी है।

राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा के शस्त्र से और सभी भारतीयों के किसी न किसी रूप में योगदान से भारत को स्वतंत्र राष्ट्र का रूप देकर और महर्षि दयानन्द द्वारा समाज सुधार के कार्य क्रमों को भी आगे बढ़ाया। ये महापुरूष देवता थे, उन्हें ईश्वर ने संसार में सम्भवत: सत्य को सत्य कहने के लिये भेजा था परन्तु खेद है कि महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी जैसे देवताओं को इन धर्मान्धों ने असमय काल के गाल में ढकेल दिया और उनका कार्य अधूरा रह गया। अब तो यही है "जब तक सूरज चाँद रहेगा दयानन्द, गाँधी तुम्हारा नाम रहेगा।"

इति

प्रभु भजन संकलन

1

हे सर्वाधार सर्वान्तरयामिन परमेश्वर! आप अनन्त काल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो, प्राणी मात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को प्रतिक्षण पूर्ण करते रहते हो, हमारे लिये जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे बिना माँगे ही हमारी झोली में डाले जाते हो, आप के आँचल में अविचल शांति तथा आनन्द का वास है, आपकी चरण शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि तथा सभी अभिलिषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत पिता परमेश्वर हम में सच्ची श्रद्धा और विश्वास हो हम आपकी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बने अन्त:करण को मलिन बनाने वाली, स्वार्थ तथा संकीर्णता की क्षुद्र भावनाओं तथा मलिन वासनाओं से ऊंचे उठे। काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं को हम दूर करें, अपने हृदय की आसुरी वृत्तियों के साथ युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिये हे प्रभु हम आप को ही पुकारते है और आप का ही आंचल ग्रहण करते हैं।

हे परमपावन प्रभु हम में सात्विक वृतियां जागृत हों क्षमा, सरलता, निडरता, स्थिरता, अहंकार शून्यता आदि शुभ भावनायें हमारी सम्पति हो, हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ठ हो मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, आपके स्पर्श से हमारी सभी वृत्तियां विकसित हो, हमारा हृदय दया और सहानुभूति से भरा हो, हमारी वाणी में मिठास हो दृष्टि में प्यार हो, हम विद्या और ज्ञान से परिपूर्ण हों, हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो।

हे प्रभु! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो हमारा जीवन आप को

अर्पित हो इसे अपनी सेवा में लेकर कृतार्थ करो।

2

सच बोलो हरिनाम लो करो न कपट व्यवहार।
हर प्रकार हिंसा तजो, करो अतिथि सत्कार।।
ब्रह्मचर्य पालन करो परधन को दो त्याग।
वस्तु परिग्रह न करो, हिय धरो वैराग।।
प्रेम सदा सब से करो। करो सदा सतसंग।
दुखियों की सेवा करो कभी न बदलो रंग।।
घंमड कभी न करो। क्रोध करो नहीं भूल।
हरि पूजा के अति सुखद ये हैं पन्द्रह फूल।।

3

भलाई कर चलो जग में तुम्हारा भी भला होगा।
किया जो काम नेको व बद, वह एक बरमला होगा।
सताते हो दीनों को न खाते खौफ़ मालिक का।
सितमगर भी कोई देखा जो फूला फला होगा।।
जान अपनी सी समझ कर मत दुखाओ दिल किसी का।
सतायेगा तुम्हें बेशक जो खुद तुम से सता होगा।।
फरायज अपने को हर दम अदा करते रहो फौरन।
मजा बलदेव विषयों का एक दिन बला होगा।।

4

ओ३म मेरे धर्म की मुँह बोलती तस्वीर है।
है यही सर्वस्व मेरा और मेरी जागीर है।।
प्राणों से प्यारा ईश्वर दुख मोचन हार है।
दाता है सारे जगत का सबका पालन हार है।।

भक्त हों हम ईश्वर के, ऐसी इच्छा हम करें।
परोपकारी बने और पाप कर्मों से बचें।।
ज्ञान बुद्धि दीजिये और ब्रह्म बुद्धि दीजिये।
हाथ जोडे मैं कहूँ मेरी शुद्धि कीजिये।।

5

ओ३म अनेक बार बोल, प्रेम के प्रयोगी।
है यही अनादि नाद निर्विकार, निर्विवाद।।
भूलते न पूज्यपाद वीतराग योगी।।
ओ३म अनेक बार बोल,.......................
वेद को प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान।
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग भोगी।।
ओ३म अनेक बार बोल,.......................
ध्यान में धरे विरक्त, भाव से भजे ....।
त्यागते अघी अशक्त, पोच पाप रोगी।।
ओ३म अनेक बार बोल,.......................
शंकर आदि नित्यनाम जो भजे बिसार काम।
तो बने विवेक धाम मुक्ति क्यों न होगी।।
ओ३म अनेक बार बोल,.......................

6

ओ३म है जीवन हमारा, ओ३म प्राणाधार है।
ओ३म है कर्त्ता विधाता ओ३म पालन हार है।।
ओ३म है दुख का विनाशक, ओम सर्वानन्द है,
ओ३म है बल तेज धारी, ओम करूणानन्द है।।
ओ३म सब का पूज्य है, हम ओ३म का पूजन करे।

ओ३म के ही ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओ३म के गुरु मंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि प्रति दिन बढ़ेगी धर्म में होगी लग्न।।
ओ३म के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह जप हमको मुक्ति तक पहुँचायेगा।।

7

पितु, मातु, सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कुछ और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।।
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुखदुर्गण नाशन हारे हो।।
प्रति पाल करो सगरे जग को, अतिशय करूणा उर धारे हो।
भूलि हैं हम ही तुम को तुझ तो, हमारी शुद्ध नाहि बिसारे हो।।
उपकारन को कुछ अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
महाराज महामहिमा तुम्हरी, समझे बिरले बुधवारे हो।।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरि केहिके अब ओर सहारे हो।

8

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय है एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती भर का, प्यार तुम्हारे हाथों में।
या तो जग से दूर रहूँ, जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में
यदि मनुष्य ही मुझे जन्म मिला, तो तव चरणों का पुजारी रहूँ।
मुझ पूजक की एक-एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।

जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार तुम्हारे आऊँ मैं।
तब तब हो पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में।।
मुझ में और तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, और संसार तुम्हारे हाथों में।।

9

अजब हैरान हूँ भगवान, तुम्हे क्योंकर रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।
करे किस तौर आह्वान, कि तुम मौजूद हो हर जाँ"
निरादर है तौर बुलाने को, अगर घंटी बजाऊँ मैं।
मूर्ति में भी तुम हो, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।।
भला भगवान को भगवान पर, क्योंकर चढाऊँ मैं।
लगाना कुछ भोग तुमको, एक अपमान करना है।।
खिलाता है जो सब जग को, उसे क्योंकर खिलाऊँ मैं।
ज्योति से तेरी रोशन है सूरज चादँ और तारे।।
महा अन्धेर है जो तुमको, दीपक दिखाऊँ मैं।।
भुजायें है न गरदन है, न सीना है न पेशानी।
तुम निर्लेप हो भगवान, कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं।।

10

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ।
वह है हर एक वस्तु में अन्दर रमा हुआ।।
मिलता नहीं है इसलिये अज्ञानियों को वह।
अज्ञान का बुद्धि पर है परदा पडा़ हुआ।।
दुनिया के दुख रूप समुद्र से है वह पार।
जगदीश से हैं प्रेम अति जिसका लगा हुआ।।
सच्ची खुशी से रहते हैं वे जन सदा अलग।

जिनका मन है विषय भोग में फंसा हुआ।
मन तो मलिन वैसे ही पूर्ण रहा तेरा।
गंगा में रोज जा के नहाया तो क्या हुआ।।
खोते है खेल कूद में जो उम्र रायगाह।।
अफसोस उनकी बुद्धि पर है परदा पड़ा हुआ।
रहता है अज्ञानियों से केवल वह दूर-दूर ।
ज्ञान चक्षु खुल गये तो वह है मिला हुआ।।

11

तेरे दर को छोड़क़र किस द्र जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं।।
जब से याद भुलाई तेरी सैकडों कष्ट उठाये हैं।
क्या जानू इस जीवन में मैनें कितने पाप कमाये है।।
हूँ शर्मिन्दा आप से क्या बतलाऊँ मैं।।
मेरे पाप कर्म ही मुझ को तुमसे न मिलने देते हैं।।
कभी जो चांहू मिलू आप से, रोक मुझे ये लेते है।
कैसे स्वामी आप के दर्शन पाऊँ।।
है तू नाथ वरों का दाता सब वर तुझ पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरा ही गुण गाते है।।
छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊँ मै,
बीती सो बीती बाकी उमर सम्भालूँ मैं"
प्रेम पाश में बन्धा आप के गीत प्रेम से गालूं मैं।

12

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सब की, भगवान पूरी होय।।
विद्या बुद्धि तेज बल सब के भीतर होय।

दूध पूत धन धान्य से वंचित रहने कोय।।
आप के भक्ति प्रेम से मन रहे भरपूर।
राग द्वेष से चित मेरा कोसों भागे दूर।।
हमें बचाओं पाप से कर के दया दयाल।
अपना भक्त बनाये के कर दो हमे निहाल।।
हमें भरोसा नाम का सदा रहे जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश।।
दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार।
धैर्य हृदय में वीरता सबको दो करतार।।
नारायण तुम आप हों दुख विनाशन हार।
क्षमा करो अपराध सब कर दो भव से पार।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये करूणा निधान।
साधु संगत सुख दीजिये, दया नम्रत्ता दान।।

13

हरि हर समाया है हरियालियों में वही झुमता है हरि डालियां में।।टेक।।

कहीं रोज़े रोशन कहीं चाँदनी है
गरजता वह ही है घटा कालियों में।।
हरि हर समाया है.......।
वही आर्य में है वही मुसलिम ईसाई पारसी में।
वही रमा रहा सभी धर्म की प्रणालियों में।।
हरि हर समाया है.......।
वही पवन में, वही सागर की तुम तरगों में।
वही तैरता है जलचर मछलियों में ।
हरि हर समाया है.......।
वही फूल में हैं, वही सब पूजा गृहों में।

वही दीखता है आकाश की लालियों में ।।
हरि हर समाया है.......।
वही मरूस्थल में हैं, वही गगन चुम्बी चोटियों में।
वही चमकता है सागर की झालियों में।
हरि हर समाया है.......।
यहाँ भी वही, वहाँ भी वही।
कही क्रियाशील है सभी धर्म की प्रणालियों में।।
हरि हर समाया है.......।
वही दिखता हैं हर शै के नूर में, वही अयाँ है हर बनूर में।
वही रक्षा करता है रात कालियों में।।
हरि हर समाया है.......।
सोचो यह सीख बड़े काम की है।
मुसाफिर की बातें बड़े काम की हैं उड़ना न सुनकर तालियों में।
हरि हर समाया है.......।

14

भज ले ओंकार रे मन मूर्ख अनारी।। टेक।।
चार दिन के जीवन खातिर कैसा जाल पसार।
भज ले ओंकार रे मन मूर्ख अनारी।
कोई न जीवत संग, तुम्हारे मात-पिता सुत नारी।
भज ले ओंकार रे मन मूर्ख अनारी।
पाप कपट से धन संचित कर, मूर्ख मौत बिसारी।
भज ले ओंकार रे मन मूर्ख अनारी।
यह जीवन दुर्लभ, देत बृथा क्यों डारी।
भज ले ओंकार रे मन मूर्ख अनारी।

15

(गायत्री मंत्र का हिन्दी पद्यान्तर)

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुझसे पाते प्राण हम, दुखियों के दुख हरता तू।
तेरा ही महान तेज फैला है सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में है तू विद्यमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

16

(प्रभात फेरी)

उठ जाग मुसाफिर भोर भयी, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है जो खोवत, जो जागत है सो पावत है। उठ।
टुक नींद से अखियां खोल, अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करण की रीति नहीं, प्रभु जागत है, तू सोवत है। उठ।
जो कल करना है आज कर लें, जो आज करना है अब कर लें।
चिड़ियों ने जब चुग खेत लिया, पछताये क्या होवत है।।टेक।।
नादान भुगत करणी अपनी ओ पापी पाप में चैन कहाँ।
पाप की गठरी शीश धरी, फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है। उठ।

17

भोर भयो पक्षी वन बोले, उठो नर प्रभु गुण गाओ रे।
लखो प्रभात प्रकृति की शोभा, बार-बार हर्षाओ रे।
प्रभु की दया सुमीर निज मन में, सरल स्वभाव उपनाओ रे।
हो कृतज्ञ प्रेम में उसके, नैनन नीर बहाओ से

ब्रह्म रूप सागर में मन को बारम्बार डुबाओ रे।
शीतल निर्मल लहरे ले ले, आत्म-ताप बुझाओ रे।

18

मन मेरो ओंकार भजो ।। टेक।।
प्रातः काल उठ शुद्ध बदन , चित एकाग्र करो रे।
ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप में, नित तुम ध्यान धरो रे ।। मन मेरो।।
करि सन्ध्या जप महामंत्र को, बुद्धि विमल करो रे।
यथा शक्ति उपकार नित्य कर जीवन सुफल करो रे।। मन मेरो।।
सब जीवन पर कृपा दृष्टि कर, हिंसा त्याग करो रे।
मांस, मीन, मद, मुद्रा मैथुन, पंच मकार तजो रे।। मन मेरो।।
किशोर बहुत दिन सोये बिताये, अब कुछ चेत करो रे।
काल कराल निकट आ पंहुच्यो, अब तो तनिक डरो रे।। मन मेरो।।

19

वह शक्ति हमें दो दयानिधे ! कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।। टेक।।
पर सेवा पर उपकार में हम जीवन सुफल बना जावे।
हम दीन दुखी निबलों-विकलों के सेवक बन सन्ताप हरें।
जो है भूले भटके अटके उनको तारें खुद तर जावें।। वह शक्ति ।।
छल दम्भ द्वेष पाखण्ड झूठ अन्याय से निशि दिन दूर रहे।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना शुचि प्रेम सुधा रस बरसाये। वहशक्ति।।
निज आन मान मर्यादा का प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जावें।वह शक्ति।।

20

जिसमें तेरा नहीं विकास ऐसा कोई फूल नहीं है। टेक।।
मैने देख लिया सब ठोर तुझ सा मिला न कोई ओर।

सब का तू है सरमौर इसमें कुछ भी भूल नहीं है।। टेक।।
तुझ से मिलकर करूणानन्द, मुनिवर पाते हैं आनन्द।
तेरा प्रेम सत्यचित आनन्द, जिनको मंगल मूल नहीं है।
उर धर धर्म जीवनाधार, गुरूजन कहे पुकार पुकार।
उसका बेडा होगा पार, जिसके तू प्रतिकूल नहीं है।। टेक।।
तेरा गायें अखिल गुणगान करनी करता निष्काम।
मन में शंकर सुखधाम, मेरे मन संशय शूल नही है ।। टेक।।

21

ओउ्म जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।। टेक।।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे।
जो ध्यावे फल पावे, दु:ख विनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। टेक।।
माता-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अर्न्तयामी।
परम ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी।। टेक।।
तुम करूणा के सागर तुम पालन करता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भरता।। टेक।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।। टेक।।
दीन बन्धु दु:ख हरता, तुम रक्षक मेरे।
करूणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। टेक।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। टेक।।

22

हे दया मय! हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर कर के सब बुराई को भलाई दीजिये।।
लीजिये हम को शरण में, हम सदाचारी बने।
वीर व्रतधारी और ब्रह्मचारी बने।।
कीजिये ऐसा अनुग्रह हम पे हे परमात्मा।
हो निवासी सब जगह के सब के सब धर्मात्मा।।
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा, हो अविद्या नाश से।।
खोटे कर्मों से बचें, और तेरे गुण गायें सदा।
छूट जावें दुःख सारे और सुख सदा पावें सभी।।
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञानसे भरपूर हो।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण दूर हों।।
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित धरा के सब देश।
वायु जल सुखदायीं होवें, मिट जाये सारे कलेश।।
वेद के धर्म प्रचार में होवें, सभी पुरूषार्थी।
परस्पर हो प्रीति सब में, और बने परमार्थी।।
कामी क्रोधी और लोभी, कोई भी हम में न हो।
सर्व व्यसनों से बचें, और छोड़ देवें मद मोह को।।
अच्छी संगत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक, सब कुकर्मों से बचे।।
कीजिये हम सबका हृदय शुद्ध, अपने ज्ञान से।
मान भक्तों का बढाओं अपनी भक्ति दान से।।

23

जीवन! बन तू फूल समान। टेक।।

पर उपकार सुरभि से सुरभित, सतत हो सुख दान। जीवन।।टेक।।
स्वच्छ हृदय हो, खिल जा प्यारे तूभी प्रेम रस को धारे।
सुखदाई हो सब का जग में, पास बसे सन्मान। जीवन।।टेक।।
कठिन कँटको के घेरे में दुख दारूण फेरे में।
पड कर विचलित कभी होना, बनना नहीं अजान।।टेक।।
शत्रु मित्र दोनों का हित्त हो, यह शुभ पावन तेरा व्रत हो।
मधु दाता हो सब का जग में, तजकर भेद विधान।।टेक।।
दे सुरभि तू टूटने पर भी, पैरों तले फूटने पर भी।
इस विधि से प्रभु की माला में पाले प्रिय स्थान।।टेक।।

24

ओ३म ओ३म नित्त बोले रे मन बावरिया। टेक।।
ओ३म नाम प्रभु का प्यारा, जीवन का है यही सहारा।
जगह-जगह मत डोल रे, मन बावरिया।। ओ३म-ओ३म.
जीवन अपना सफल बना ले, वेदों का मार्ग अपना ले।
जीवन है अनमोल रे, मन बावरिया।।टेक।।
मेरा-मेरा कह कर फूला माया के बस प्रभु को भूला।
बजे कान पर ढोल, से मन बावरिया।। ओ३म-ओ३म..
सिर पर मौत लगाती फेरा, मानव! अमर नहीं तन तेरा।
होवें बिस्तर गोल, रे मन बावरिया।। ओ३म-ओ३म...

25

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई कलेश लगा न रहा।
ज्ञान की गंगा में जो नहाया उसके मन में मैल जरा न रहा।।
परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आँखों से।
प्रकाश हुआ उसके मन में, उससे कोई भेद छिपा न रहा।।
पुरुषार्थ ही इस दुनिया, में सब कामना पूरी करता है।

मन चाहा सुख उस ने पाया, जो आलसी का पड़ा न रहा।।
दुःखदायी हैं शुत्र हैं ये विषय हैं जितने दुनिया के।
वह पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इन के फंसा न रहा।।
जब वेद विरूद्ध मत फैले, तब पत्थर की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, तब ज्ञान का पाँव जमा न रहा।।
यहाँ बड़े-बड़े महाराज हुए, बलवान हुए विद्वान हुए।
पर मौत के पंजे से, संसार में कोई केवल! बचा न रहा।।

26

यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव, उज्जवल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेध यज्ञ आदि रचायें पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञ आदि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण हो यज्ञ से नर-नार की।।
लाभ कारी हो यज्ञ, हर जीवधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गंध को धारण किये।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ प्रसार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।
प्रेम रस से तृप्त हो, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करूणानन्द करूणा आप की, हम सब पर रहे।।
यज्ञ रूप प्रभु, हमारे भाव उज्जवल कीजिये।

छोड देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये।।

27

ब्रह्मन! स्वराष्ट्र में हो द्विज, ब्रह्म तेज धारी।
क्षत्रिय महारथी हो अरि दल विनाश कारी।।
होंवे दुधारू गऊयें, पशु अश्व आषु वाहि।
आधार राष्ट्र की हों, नारी शुभग सदा ही।।
बलवान सभ्य योद्धा यज्ञवान पुत्र होवें।
इच्छा अनुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवे।।
फल फूल से लदी हों, औषध अमोध सारी।
हो योगक्षेम कारी, स्वाधीनता हमारी।।

28

सब पर दया करो भगवान।
सबका भला करो भगवान।।
सब पर कृपा करो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हो निरोग भगवन धन-धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, संमार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राण धारी।। हे ईश___।।

29

तजो बल वैभव का अंहकार, बनो शिष्ट विन्रम और उदार।।

30

खाओ पियो छको नहीं, चलो फिरो थको नहीं।
देखो भालो तको नहीं, बोलो चालो बको नहीं।।

31

मनुष्य ने प्रभु से कुछ आपात्तियाँ बताई तो, प्रभु उसे उत्तर देते हैं।
पास रहता हूँ तेरे सदा मैं, अरे नहीं देख पायें तो मैं क्या करूँ।।टेक।।
कोसता है दोष देता है मुझको यह नहीं दिया मुझको वह नहीं दिया।
सर्वश्रेष्ठ मनुज तन दे दिया तुझको, न सब्र आये तो मैं क्या करूँ।।
तेरे हृदय में विराजा हुआ, न कर यह पाप संकेत करता हूँ।।
विषयों में लिप्त हो, सीख मेरी भली न ध्यान में लाये मैं क्या करूँ।। टेक।।
साग-साग सुमधुर आहार दिये तुझको।
तम्बाकू अमल मद्य माँस खा, तन को रोगी बनाये तो मैं क्या करूँ।।टेक।।
सरस सुखकर पदार्थ, सुदृश्यों भरा विश्व, प्रकाशार्थ दिया तुझ को।
अपने ही करतब से, स्वर्ग वातावरण को नरक बनाये तो मैं क्या करूँ।।टेक।।

32

धर्म वैदिक है हमारा, आर्य प्यारा नाम है।
वेद के अनुसार सारा, जग बनाता काम है।।1
ब्रह्म की पूजा करें, भ्रम भेद दूजा दूर कर।
सच्चिदानन्द ही मंगल, अज अभिराम है।।2
वेद का पढ़ना पढ़ाना, परम पावन धर्म हैं।
सत्य विद्या का वहीं वर, विश्व विद्या धाम है।।3

33

दयानन्द देश हितकारी, तेरी हिम्मत की बलिहारी ।। टेक।।
अविद्या भारत में छाई हुई, नींद गफलत की आई हुई थी।
तेरा आना था गुणकारी! दयानन्द देश हितकारी तेरी हिम्मत।
वेदों का तू प्यारा था, भारत का तू सितारा था।
तेरे दर्शन की बलिहारी । टेक।।

मिलने जो तुझ से आते थे, दिली संशय मिटाते थे।
सभी भारत के नर-नारी।। टेक।।
चलाई ब्रह्म की पूजा, समाजें बन गयी हर जाँ।
तेरा उपकार है भारी दयानन्द ।। टेक।।

34

धन्य है तुझ को हे ऋषि तूने हमें बचा लिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया।। टेक।।
अन्धों को आंखे मिली, मुरदों में जान आ गई।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया।।
क्या तासीर थी तेरे वचन में है कितने शहीद हो गये।
कितनों ने सिर कटा दिया।। धन्य है तुझको.......
अपने लहू से लेखराज तेरी कहानी लिख गया,
तूने ही लाला लाजपत शेरे बबर बना दिया। धन्य है तुझको......
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पे खाई गोलियाँ।
हंस-हंस कर हंसराज ने तन धन लुटा दिया। धन्य हैं तुझको..
सन् उन्नतालीस में तेरे दीवाने जिस घड़ी हैदराबाद चल दिये।
दुनिया का दिल दहला दिया। धन्य हैं तुझको.......

35

देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है।। टेक।।
भारत निवासियों को बेदार कर गया है।।
बे होश बे खबर हम सोये हुए पड़े थे।
सब को जगा जगा कर होशियार कर गया है।। टेक।।
भारत की दुर्दशा में कुछ भी कमी नहीं थी।
करके समाज कायम उद्धार कर गया है।। टेक।।
वेदों का नाम तक भी भूले थे लोग सब ही

उनका हर जगह पर प्रसार कर गया है।। टेक।।
वेदों का भाष्य करके, विद्या व योग बल से।
सच्चे धर्म के ज़ाहिर इसरार कर गया है।। टेक।।
संस्कृत धर्म भाषा जो हो चुकी थी मुरदा।
फिर से जिलाकर उसको जाँदार कर गया है।।टेक।।
हिन्दू, गुलाम, काफिर कहलाने जो लगे थे।
आर्य बनाकर उनको सरदार कर गया है।।टेक।।
मतमतान्तरों की दीवार व किलों को,
युक्ति के फावड़े से बिस्मार कर गया है।।टेक।।
होने न पाये कोई ईसाई या मुस्लमाँ,
आर्यों की एक सेना तैयार कर गया है।।टेक।।
गुरुकुल का वह तरीका बतला के आर्यों को।
ब्रह्मचर्य आश्रम का उद्धार कर गया है।।टेक।।
बेकस यतीम बच्चे जो माँ-बाप ने बिसारे।
उन सब का आर्यों को गमख्वार कर गया है।।टेक।।
नारी जो माता-गुरु कहाती है, उपेक्षित थी अब तक।
उसकी वेद शिक्षा के लिये सबको तैयार कर गया है।।टेक।।
आओ मिलकर बैठों, सब भेदभाव छोड़कर।
विकास का यह मार्ग प्रशस्त कर गया है।।टेक।।
क्योंकर समाये गागर में नीर सागर।
क्योंकर बयाँ हो सारे जो कारकर गया है।।टेक।।
माने न कोई माने सच तो यह है सालिग।
बागे धर्म को स्वामी गुलजार कर गया है।।टेक।।

36

धैर्य, क्षमा, दम्भ पर अपना अधिकार रखो, चोरी

कभी न करो, शरीर को स्वच्छ और व्यायाम आदि से शुद्ध रखो, इन्द्रियों को विषय वासना की ओर न जाने दो, सब काम बुद्धि और विवेक से लो, सत्य बोलो, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय कर उनका अनुसरण अपने जीवन में अनुसरण करो, क्रोध न करते हुए सुख शान्ति, परोपकार और राष्ट्र प्रेम के अनुपम मार्ग पर चलकर ही मानव का कल्याण है; अन्यथा और कोई मार्ग नहीं। धन्यवाद!

शान्ति पाठ

ओ३म शान्तिरन्तरक्षि९ँशान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधय शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः। सर्व९ँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेहि।।

प्रकाशमान सूर्य लोक में शान्तिः हो और सुखदायी हो। सूर्य और पृथ्वी के मध्य भाग अन्तरिक्ष में शान्तिः हो, किसी प्रकार बवण्डर न होकर सुखदायी हो। पृथ्वी पर भी सुख शान्तिः हो। समुद्रों में भी तूफान न आकर शान्तिः का वातावरण बना रहे। औषधियाँ रसयुक्त होकर अति गुणकारी हो। सभी वृक्ष हरे भरे हो शुद्ध वायु प्रदान कर अन्य प्रयोगों में भी लाभकारी हो। सारे संसार के प्राणी मात्र में सुख और शान्ति रहे, सारे ब्रह्माण्ड में शान्ति का वातावरण हो। सभी स्थानों में शान्ति हो शान्ति हो और हे प्रभु वह शान्ति मुझे भी प्रदान करो।

द्यौः=सूर्य, आपः = जल, ब्रह्म = ब्रह्माण्ड, विश्वेदेवा = प्राणी मात्र, ऐधि = प्रदान करो।

संस्कृत सन्धियों और समासों की भाषा है अतः थोड़े शब्दों में ही बहुत कुछ कहा जा सकता है।

इति

'गर्व से बोलों हम हिन्दू हैं', ऐसा कहने वालों को क्या इस बात का गर्व है कि हम आठ सौ वर्ष गुलाम रहे? क्या इस बात का गर्व है कि इस धर्म का कोई प्रवर्तक नहीं? क्या इस बात का गर्व है कि इस धर्म का कोई धार्मिक साहित्य नहीं? क्या इस बात का गर्व है कि अन्धविश्वास के कारण सर्वव्यापक प्रभु की उपासना के साथ-साथ अनेक देवी देवताओं की पूजा करते हैं? क्या इस बात का गर्व है कि बिना सोचे समझे अन्धी नकल करते हैं? क्या हम इस बात का गर्व करते हैं कि हम अपने पूर्वज भगवान राम का मन्दिर बनाने के लिये बलिदान देने के लिए तैयार हैं जबकि स्वयं भगवान रामचन्द्र आर्य थे, और हम 'हिन्दू'? क्या हम इस बात का गर्व करते हैं कि गुलामी के काल में ही हमको महर्षि दयानन्द ने जगाया कि हमारे सनातन धर्म और आर्य जाति का ह्रास हो रहा है और कहा कि हम हिन्दू नहीं, आर्य हैं फिर भी हमने उनकी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं दिया? हमारा देश भारत 26 जनवरी सन् 1950 को सम्प्रभु सत्ता सम्पन्न स्वतंत्र राष्ट्र घोषित हो गया था, परन्तु हम हिन्दू ही बनें रहें। क्या यही गर्व की बात है?

मुद्रक : किरण ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, कनखल, हरिद्वार # 9837007222